

Chapter-4

.. ३६६ ..

(न)

प्रकरण ४

कुमार संख्या

विश्वा वीरभूत साताहत्या प्राथः परमां रथादु

कै. लिटर नेमां अस्त्राहत्या पा धुँ कै. देहकाल परी
अस्त्राहत्याकाल सार्व काल्योनि ६१० अदे नै - राजाभाष्य
अने भाषाभास्त्रालो. पुराण उपमुराणानु साताहत्या पा धु
विवाह कै. आ वीरभूत (श०८ (Classical) महाकाव्य
लेनार्थी लुटी साताहत्याप्रकार है, ते वधारेकला, विद्वता
कने ओपर्वर्तु है, लेना काव्यो भोटे आये राज्याश्रयी
कवियो हला. ऐट्ले ते Court epic ने नामे ओपर्वाय
है, ते Ornate Poetry पा क्षेवाय है. नेमां
काव्यताकला, ठै, अर्काल, रसविन आ०८ त२६
वधारे चान अपाय है. लेना विषयो भोटे आये आर्थकाव्यो
के पुराणार्थी लेवाया है. अ्यारेक उमकालीन
गानवस्थहस्तमर्थी पा विषय लेवाया अदे है.

साताहत भडाकाव्यपर्वत्याद धूर्णा जुन् है. का विद्वत
पठेवां पा ते रथातर्फ इला. अपवधीजनां भडाकाव्यो
रथनाकालाना (विकासना) के क्षात्र रथु करे है, ते लेना लेना
पा ठी८ ठी९ समय पठेवां एवां काव्यो रथातर्फ उके अम
आये है. काव्य का विद्वत पा भावावहा। अभ्यन्तर्मन भाव,
द्वौ भव्य कव्युक्ता हनि उल्लेख करे है. भावनां नाटको
भव्य है पा कालो भावेव भै है, छै ते नामे अउवा
श्वोकीभाव भडाकालाना अर्ना। प्रातिसाना दर्शन आय है.
प्रातिसान, वर्तुय, अने अतिरिक्ते नामे श्वो भै भै है,

अने लेखने भुजाकात्य लग्नाना। उल्लेखो धन ऐ. अर्थात्
 भुजाकात्य रथनानो परंपरा जुनी है। आश्वद्दीप्ति, उत्तरेष्ट, वल-
 लाहु जेवा। उव्वेळोनो रथना तेन प्रतिपत्ति की जाए। गंगाकृतम्
 रथनाम् निष्ठाप्तव मुजाकात्यानोम् पर्यः गंगार्द्दम, गुमार्गंभव,
 उत्तरेष्टाकुन्तस्य, शशुमालवध, अने नेष्टीयम् रतः शीर्थी
 वधारे भुजत्वना। गाया। ऐ. लेखने कावकाविहाने नामे
 पठेवारे ऐ है। ते लेखनी शावप्राप्तवाने भुजान अंजलि है।
 अऽन्नपुराणः १ः ५१व्यादीः २ः अने गायात्र्यवैष्णवः ३ः जेव।
 अलंकार - शास्त्रना। इथो भुजाकात्यानो ऐ रथनाप्य। अपै ले
 तद्गुणार उव्वेळा। भुजाकात्यानु स्वाम् है। गुमार्गंभव कवितु
 पूर्थम् भुजाकात्य ले जेम् विद्वानो भीटे अर्थे अवाकारे हैं।
 लेखने प्रार्थितवानः डेटलीक कथाश पर डेप्याय है; ४ः
 लेखना। अर्जनार्थं विवधरथ "रत्नसाया गुर्थी शु गगने" दोथ
 जेम् निष्टप्यायै, लेख लाते उत्तर मुम्पत्ये रथराज
 शूर्यारना। कृषि है। लेखना। वधा। ज सर्वनम् लेखने पीतानी
 प्रैमविषयक लावना। विवधरपे अने रीते गुर्थी है, लेखये
 गुमार्गंभवतु रथान विशिष्ट लाये हैं। लेखने निष्टप्यायै
 प्रैम भावन-भानव के भानव-भात्तमानव वर्येनो प्रैम नर्थी।
 जगत्तनों शूर्यो, स्थित, वथ कृष्णाम् अमृती जगत्तन शिव
 अने जगन्माता। पार्वतीम् ते प्रैम हैं। गायु शीर्थी नहर्य उपर

१: अथाय १३, २४ था ३२

२: हठी, अथाय १, १४ थी २०

३: विश्वनाथ, अथाय, ६

४: नारदहाय अमरार्थ १, गुमार्गंभवनो अनुवात,
 औ रव. प्रै. २१. (१. ५१६८) प्रैमतावना वर्णये।

नक्षा पर अंतर्दली नहीं अने भावेक (नियन्त्रण) रिपोर्ट दिए गए अधिकारी राखे हैं। ऐसे रेपोर्ट नियमीने, कालके अवश्यक भेद भागान्तर्यामी घोटानी दीते नहीं थुक्के हैं। अगवान शंकरने श्रेष्ठ प्राप्तिकरवाइए हेवी पार्वतीर्तु अनवश्य अने मनोडारी १५, १८ देवथी शहाय ज्ञात विवर्यां नीबुर्तु नहीं। रेपोर्ट ऐसी थापतयुक्त थे एटा करवा ज्ञात महाननो नाश थाय है। पार्वतीने शहायोनो विपर्यासितमात्र आनंदग थर्हु पढ़े हैं।

परमात्मा निनिष्प दूर दृष्टिका यार्को जेमथी जग-भगवान् ज-भवात्मु के जेवो अधिष्ठिरमनी तथा यहाँ शहाय "भावेक-नियन्त्रणरत" दोय लोक महे - तोज फो अने आ। काल्यकु परमात्मा के अने त्याँ उदात्तमु दीते रख थर्हु हैं। कालदै परमात्मा के अठाज जर्हु आ। काल्य रम्यु हेजेवो काल्यरात्मक विवानोनो अभिप्राय है। अत्यारे ते १७ अर्हतु महे हैं।

कृष्णपथम धारी हल्लीको अने अर्था थह है, तेनोचार गेहौको ज बाहे है के, कालदै को तेन। अठाज अर्थ रम्या है। अने तेने अपूर्व मुझ्यु है। अठामार्गमां काल्ये जगतनां मातापता अगवान शंकर अने पार्वतीन। श्रीजार्तु उद्दाम नियम उम्यु क्यु लेयो झोषि अराहने हेवी पार्वतीर्थे रेपने शाय आप्यो तेथीते आ। काल्य मृक्षु न करा शक्या। ऐसी उक्तिवहती है, रेपोर्ट तथा के दोय है, का तेमन। युगमात्र तेमन। आ। विषे दीका थठ दोय अने तेथी रेपने ते अद्युक्तु मृक्षु दोय ले चम्पवे है। कविनी अपूर्व प्राप्तश। अने उकानो यमकारो तेत्वा। अ संगोमां वरताय है। आकैनी रथन। उदाक्षां उत्तरती, उत्तित, निरर्थक

प: प्रा. श्री. शु. अवा, १५. कृष्णकर, डॉ. कीर्थ,
डॉ. ल०-८८८०८८ वर्षे।

प्र० १८५२ के शुद्धीवाची हेताय है। आवेकारिकोंके पछेवा
अ० १८६४ गोपनीय १२३ ऐटवां अवतरणी लीडर्स के पश्चीन।
सर्वोभावी भा० ऑफिस ऐक१८ वे० ऐटवे० प्र०। आवा०, ड०। कीथ
ड०। व०न्टरनीट्स् अ० १८६६ वृहवाची लेने अ० १८७४ अ० अ० १८७५ अ० अ०
है ले वरायर है।

१८८५नी शा० आ० ए० हेवाल्या, पूर्वीना० मानहौड लेवा०
अने भारतीय लैच्यूलना० (नल्प्रैरक नगा० धरा० अ० भैवयना०)
मनोऽउर अने सब्य वानिथी वाय है। तेन अ० अ० अ० अ० अ० अ०
क० अ० रभ्य वर्णन करे है। पूला० डेवी प॒र्वती नो॒ जन्म, तेमनु॒
झैश्व, वय वध्वा० साथे वध्वतु॒ जर्तु॒ आ॒कैष्टु॒ ली॒ न॒र्थ॒ न॒र्ष्णि॒
व॒र्षे॒ है। अ० अ० अ० अ० न॒र्ष्णि॒ व॒र्षे॒ अ॒रैला॒ अ॒गवा॒ अ॒रैला॒
न॒र्ष्णि॒ धरा॒ जना॒। अ॒कै॒ श्वरै॒ उ॒परै॒ ल॒पै॒ करे॒ है। म॒है॒ न॒रै॒
उ॒भा॒ अ॒त्यने॒ त्य॒ आ॒वै॒ न॒र्ष्णि॒ प॒र्वती॒ अ॒गवा॒ अ॒कै॒ अ॒कै॒ प॒ली॒ अ॒सै॒
अ॒मै॒ अ॒वै॒ अ॒त्यने॒ है। अ॒मवा॒ अ॒गवा॒ अ॒कै॒ अ॒नुभै॒ अ॒त्यने॒
तेमने॒ लैवनी॒ अ॒वाया॒ नियोजे॒ है। ट॒र॒क॒कुरथी॒ व॒रैला॒,
प॒र॒इ॒ला॒ अने॒ श्रीडी॒ डैवो॒ अ॒गवा॒ अ॒गवा॒ अ॒रैला॒ अ॒रैला॒
सेमना॒ कै॒रै॒ इ॒शैनगर्स॒ अ॒तु॒त करे॒ है। ते॒ तेमने॒ त्य॒ आ॒वा॒ अ॒रै॒
अने॒ न॒र्ष्णि॒ अ॒रै॒ अ॒रै॒ प॒रै॒ है, ते॒ अ॒गी॒ लै॒वै॒ अ॒रै॒ अ॒तै॒
है कै॒ अ॒गवा॒ अ॒कै॒ अ॒त्यने॒ ज॒न्मले॒। (अ॒रैरा॒ जन॒-है॒) प॒र्वती॒ नो॒
पुर्व॒ ज॒ तेमना॒ हुः अने॒ हूर॒ उरी॒ शक्षे॒, तेघो॒ तप॒क्षा॒ क॒रता॒
अ॒गवा॒ अ॒कै॒ अ॒त्यने॒ प॒र्वती॒ प्र॒त्ये॒ आ॒कै॒ अ॒त्यने॒ वाय है। प॒र्वती॒ तेमने॒

६: Kalidasa - a Study P. ३८-३९

७: A history of SG literature P. ८९

८: ऐ० P. ३८-३९

९: हुमैर संस्कृत सर्ग १

प्रथल को आवश्यक है।

अधीरा अनेका हेवो आ पाराम विवाहित
महमां आवे तरं शुद्धी धीरजरामी शक्ता नर्थ। इक
कामदेवसे शोकावे है, ते बाजर याच है अने बातगोतमां
पोताने कालाकरवा वनता करता "मील तो हु पा
भगवान शक्तर्णु धर्य पर हु यावो शक्ति लेम उदास मारे है।
इक तना पीठ धारडे है, प्रशंसाकरे है, अने हेवोना
मुरकेलानो अथल आपी तेज काम तेने लाए है। वर्षत अने
आर्थक रातथी अनुशदातो महन भगवान शक्तर्णा तपोवनमां
बव है। नन्दानो नजर युक्तवाने तेमां केम सेम धूके है, अद्य
वर्तन्तु अने महन्तु आथमन यता शृणारेन। आवो अनेत्सुहुठ
सो-हर्य पुरायहरमां शीला उठे है, पा भगवान शक्तर्णु
तपोवन तो अद्रमां लातेष्यु दीय देम शति इस्यर रहे है।
तेमनी अमाधि पा याहु ज रहे है, हैरिप्रामान भगवान
प्रनायसाठाने लेने महन हु धर्य तुटी जय है। अगलीत
अनेका तेना वाथमांको धनुष पठी जय है, लेतुय तेने भान
रहेत्तु नर्थ। येवामां भगवान शक्तरनी समाधी पुरी याय है।
पार्वताया केवामाट आवे है अने नदीनी अनुजाथी प्रवेश
यावे है। तेना शुद्धनयोउन उपर्तु काव शुद्ध वर्णन करे है। तेने
लेइने महनने धर्य आवे है। पार्वत भगवान शक्तरने मारायाएँ
करे है। ते वाग्ते महन शमोऽनावृ शीषी है। भगवान शक्तर्णु
धर्य किंचत् यो है। ते पार्वताना वहन पर नजर देखे है।
शरमाठने पार्वती आहु जुके है। सैद्यमध्यन भगवान शक्तर अस्तपूर्वक

अनन्ते अंयामत अनावे हैं। आ वहु तर्हु कारा जावा गारे
तरें जुझे हैं, तो आ अकालीने प्रलार करवा तेयार अहनने
जुझे हैं। तेमना इन नेत्रमध्ये अगुकर अनिन्द्या का अभुक्ति
कुठे है अने हेवोनो "प्रबो, श्रीधनो अंडारको, अंडार करो,"
लेवो अवार अंडाशयर्म गुजे हैं, त्वंतो अहन अन्यथेष अनी
जय है, रात मुख्या पाथे हैं, अगवान शहर पोतान।
अनिच्छाये अदृश्य यह जय है, (वहुद्दे अनोरथा अने व्याकुल
पार्वतीने नगाधरार उभातय उभुक्तीने पोताने त्वं वह
जय है। ११ अण्णोये अर्ण नाटवात्मक है, प्रवीणी अडपथि अन्ये
जय है, कावये पोतानु मानवन्वसावर्तु जान प्रगट कर्यु हैं।

मुक्तिहेतु रात बन्धत थाय है, कामेदेवने जाने
मुकुषाहृत असम रात्रि जुझे हैं, ते हुद्दे ऐहुक विवाप करे
हैं, वर्णतने याद करे हैं, तेनीये मिद्दना लेवो हा। यह जुझे
हे शु अम शंका करे हैं, हुः ओ वर्णत तेनी खम्ल प्रगट
थाय है, रातर्हु हुः य इरीने उभराय है, तेने अहनसाधे
शडगमन कर्यु हैं, ते वर्णतने (यता) रसवानी लिन्ती करे
हैं, त्वं अंडाश वारी गीर्य हैं, "हंकर ज्याए पार्वतीतु
पराण-शहर कर्ते त्वारे अहनने मुनर्जिवन प्राप्त थये" हैं
"तेने अंडाशन भये हैं, महनना अपथथि अगवान प्रगते
शरस्वत तरक अंडाश थर्हु उत्तु लेथी तेने शाप थयेको लेन्तु
आ परस्वाप है, अम तेने जावा भये हैं, ते झहगमननो
तेयार पठतो जुझे हैं। १२

त्रूपना यो न इगेको अभिलाष शंका करवा पार्वती
उभिपुकरवानो निश्चय करे हैं, औमार माता तेने वारवा

प्रथल डे ले, पर ते पोताना। नरीने वाही रहे हे।
 (पतान) अनुस्तु भेजे ले, जे सभीको साथे पर्वत शब्दे
 जडे उग्रतप आदे ले, तेनु कुण्डकोमध पर वशवारवपु ते
 तपन। तमने अरपतारी लहनकरे ले, ते भीज शोध लोडी
 हे ले, धारे धीरे तप उग्र अनु नय ले, तपवीनोने पर ते
 तप लेव। आववानी गचा। थाय ले, ते लावेलां जे उलेलां
 आश्चर्य वृक्षोने का आवे ले, पर लेने, मनोरथ अकाश अवानां
 कोठ उल्लनी डेखातां नय। ते पोताना तपना उल्ला
 वधाए ले, उल्लासामां पंचाम्बन तापे ले, धीष्मार वधामां
 झुल्लामां तप करे ले, ३१३ भीलवी नांगती ठडीमां पाणीमां
 तप करे ले, ऐक हवव ऐक अवयारी आवे ले, श्वागतपत्री
 ते पावित्रिने लेना तपन। डेनु लेवे प्रश्न करे ले, अर्थमुखे
 ते जागीने ते पावित्रिना जा अ भवाषनो परहाल करे ले,
 अगवान शंकरनी नन्हा करे ले, पावित्री ते लहन करी
 शक्तां नयी, तेववी शम्भो ई लेनो प्रतिकार - व१६
 करे ले, ते क्षेत्रे के ते लेव। डोव सेव। भसे डोय, मार्गु भनतो
 लेमां भावथो जंधायेहु ले, अटु करी भीलव। नय ले त्याए ते
 त्यांधी चाल्ला ज्वा तेवार थाय ले, त्यां अगवान शंकर
 अवश्य घारा करीने प्रश्न थाय ले, लेमनो तुष्ट पकडीने
 करे ले “हे शुद्धरा गांधी हु तपथी अरीहायेलो नारो ६१५”
 ई जे लैआपिराव लाया न वीर न लसी। ११
 पर ते सभी हवारा, (पता) परे फोताहु भार्तु भीकलव अगवान
 शंकरने सूचवे हे, ते श्वीकारी अगवान इंशव अस्ति षोने
 व१६ करे ले, डेहीअगवान चम्परिंगो, लेमनु अर्गमन ज्ञे
 अगवान इशव लायेनो तेवन्दी रंबाह करव शुद्धर दीके निष्पे
 ले, तेथी श्वीपथप्रवृत्त नय ले, इंशव लेमनो भावपुर्वक
 अवकार करे ले, लेमनी गाहा भागे ले, ते शंघ श्वीकारे ले,

द्वा १६वर्ष पूर्व लग्ननो १६वर्ष नक्की थाय है। १४

उमालयने त्वं पार्वतीने लग्नना भगव शशगार
सजलवानो विषय का थाय है। अगवान शंकरने त्वं पा ऐज
कार्य थपालाये हैं। हेवो वज्रे वार्षी ज्ञन शोषधिष्ठय पहोंचे
हैं। अने त्वं तेनी चोष्य शत्कार थाय है। शवशुरगृहे ज्ञन।
अगवान शंकरने लेव। नगरनारीमि वधि उमाय मुडी
धन। रो करे हैं। ते पार्वतीमि भावयने वग्नाये हैं। अगवान
शंकर भंडपमि पहोंचे हैं। तां लग्नविषय थाय है। कामदेव
विषयक हेवोनी प्रार्थन। अगवान शंकर शब्दीउत्ते हैं। ज्ञन
विहाय थाय है। अने अगवान शंकर ऐक भास त्वं निवास करे
हैं। १५

त्वंमि विहाय लठ गीणमाटन, अगवरक्तन। रो
वज्रे अनेक व्यापों ते हेवी पार्वतीवाये विहार करेहैं।
उमालयमि धारेधीरे प्रवर्तनं चूर्चात् चाय। अने राज्यागमनतु
कृव देवशूल ज्ञन मनोऽद वर्णन करे हैं। पहली अगवान शंकर
अने पार्वतीनी दृश्य उद्घाटये नाये हैं। आ। शर्मी
कृवनी विशेष प्रातमाना चमकात् लेव। मगे हैं। केवल
अर्द्धकारो ने कल्यननो छिं चिह्न काविहारिये हैं, और
लवद्वानो तेसे कालदायतु इ सर्वं साने हैं। लालकाशुरन।
हृर उत्पीडनथ। लालुर हेवो अर्द्ध ज्ञन। अनोने अगवान
शंकरना वडाः अर्द्धने भोक्त्ये हैं। ते अवृत्त त्रुये जावे हैं
पर। अगवान शंकर तेसे शोल्लो ज्ञन है, अने शोष्ये अराय हैं。
अगव नगरतापुर्वक लेखने हेवोनी शहेश नाये हैं। पार्वतीतेसे

१४: शर्मी ६

१५: शर्मी ७

१६: शर्मी ८

कुप अने अर्वभक्त अवानो काप आये हैं। शंकर ^{१७१८} लेखन।
लेजधी ते पोडाच ले, उठना शुभनाथ भद्रा^{१८१९} नहन
करे हैं। तो ते लेज लेमट, त्यारे स्वानुकरवा आवेदी
कुतिकालीमट, ब्रह्मानु गाय है, तेमो तेम स्त्रवत्तमां छोड़ी
है छै। त्यट ते बालकतुं रप "एव इरे है, लेना भाटे
अटन मेहाडनो अने कुलिकाली वच्चे कुलु थाय ले, त्यट
उभानयों वडारे करते शंकरपार्वती आवी पहोंचे हैं,
अगवान शंकर लेमने कहे हैं के मुमुक्षुवानो लेजधी बालक लेमनो
मुद्र ले, तेम लहने ते कुलाच नय है, त्यट मुकुलन्मो त्यार थाय
है।

हेवो अगवान शंकरने शरो नय है, पोतानो
विपल लिवारवा मुमारने पोताना लेनापात नीमवा
प्रार्थन। करे है, कुमार, लेमनो आहारी, हेवेनापाति
बनोने लवर्गमट लज है, मार्गमट ताड़कना अत्यायारनो
नशान लेने कुण्डि थाय है, लेनी शयेना शुद्धिनु लेयावी
थाय है, प्रवृद्ध हेवेना, प्रथानी धर्मकथी विश्वने भरीहेती,
कुण्ड करे है, ते वात शंभुली क्रोष भरावेलो तारक पान
शुद्धिरोगनो आजा करे है, लेनु विक्राण अने वार्षा
सैन्य पान प्रवाणु करे है, तेने मार्गमट भर्तुर अमशुकनो
थाय है, पाला वगवानो अलाल पान भके है, पाल ते गलाकारनो
नय है, यहु झैन्यनो लेटो थाय है, भर्तुर वशाम लेने भारे
वनाश थाय है, तारकशुरना पराइय पाने हेवो वार्षवार
पाठ। पडे है, हेवटे तेने अने कुमारने वायुरु थाय है, भर्तुर
वशाममट ऐड शंकरीजनो शश्वीने न एका वनावे है, अते

તારીખ, ક્ષમતાનું હશે, જોએ હે કે તે લાં કાલ
પૂર્ણ થાય છે.

આ કાળ વન્તુ મહાભાગિત, રામાયણ, મદ્દબ્ય.
જીત, આંદેશાલી, મુરાઓમાં જુદે જુદે ચવાયે જુદે જુદે રથથો
લેવા અણે હે. તેનો વગતોમાં ટીક ટીક ફરક પણ હે.
થાં, વાંદરદાંડ વન્તુને કાં બણે ખોક બાપ્યજન્યા ભર્યું રાય આપ્ય
દે. મહાભાગિત ધીર્યાવાર વન્તુને કલ્યાણ વરદી દેતા
નથી. વાતરીની રંગ તો એકો મણે સેનો પરિપરામણી
દર્દીકારા કે છે., પોતાનું જીવન પ્રાતિષ્ઠાનિ અને કાંદુશાસ્ત્રાચી
સેને કલાલ્યા લાટ જાપે હે, એંદ્રાધેર, અદ્ધતા તિવનાની
વન્તુને એકતા આપી પોતાનું પ્રાતિષ્ઠા, કલ્યાણ અને વર્ગીયા ડલને
જો સેમાં પ્રાણસ્થાયાર કરે હે. અદ્દાં પણ નેમજ થર્યું હે. વાતરીનું
પુર્વા તે પરિપરાના દ્વારાં હે, પણ સેને એકતા, કલાલ્યાધ્યાંસ,
રસ, વિજન, અવનર્હનના રણો, તું સેમણે જ આપ્યા હે.
હેવ ઈપાનિમાં પોતાનું કથાનિને ભાનવભાનો જાગીરોપાને
મનુષ્ય વિભાગનું ઉર્કુંસાન, પ્રેરાવષયક પડાન અન્યાનું નિર્માણ,
તાત્કાલિન અમાજના રોતરીબાજ આદિનું અલેઝન કરવાનું
કરવાને અપૂર્વ કૃષ્ણાજનની તથા ત્રલાંકમની પરિષય આપ્યો હે.
આ કલાલ્યા લાંબસુંઘ જે રખસુંઘના લાંબાતા તો જે
પોતે જ હે. *Alas* અન્યાની અન્યાને અરુદેશ્વર શશ્વત, હેવતાલ્યા
નગાંધરાજ, અભિધારી, દેવો, પદ્મ, વાત અને મેના
અર્દુધરી, રાત, લગ્નરરાજ કશોની પાવતો, જાનિપાત્રો

१५: अर्ग २२ शुभी

१२०: भुजाकारत - वन, शब्द, गुजरातीनपर्वी, रामायण -
शब्दकोश.

અને લેમની વાવથ ચેષ્ટાળોના નિર્પામાં અને કુન્દલબનને
સમજાના શાયતમાં લેમની કલાર્ડ રોડ કુણાણે ખાલી છિઠ્યો
છે. પાત્રોં અમાનન હોય, પણ આવો માનવ હો. તેના નિર્પામાં
પ્રગટ્યું જીવનનનનાંનાં અન્ય વિરોધ હૈ. પાત્રોની રેખાળો, લેમની
વાવથ ચેષ્ટાળો અને ભાવો વેવાથ મર્યાદ, શુક્ર, આદર્શો

લેખજ વિદ્યા અન્ય ભરપુર હો. કાવવર રવી નુનાણ હાટુરે
હેન. પ્રગટ્યુંમાં કાવેલા કાલનો પ્રાન્તું ભાગ માટે હૈ:

1. When you shall go out, to the god and goddess,
2. Shiva and Parvati, the conq. of the birth of Kaurava,
3. All around stood the ghostly attendants.
4. On the mountain Great descended slow and peaceful
evening clouds.

5. The lightning did not flash, the thunder was mute,

6. Kartika's peacock, lowering its tail.

7. Stood quietly by the side of Parvati,
curving its lifted neck.

8. Sometimes a crocheted smile, crocheted on the lips of the
Goddess,

9. Again, a long sigh was emitted unnoticed Agni!

10. Again the swelling tears appeared at the corners of the
eyes.

11. She at length confused aware now descended silently on
her lowered eyelids

12. You, feet, glancing at the Goddess suddenly stopped
your unfinished song.

ને કાંચને ઉત્પાત થિજાય હૈ.

: : કુમારશીખર : :

માનશીકર પ્રભાશીકર સટ્ર - ૧૩૧૪

પ્રચારાવનામાં અનુવાદક કાલિકાંગ (વષયક ઓડી કિંબદતી જાપે હૈ. તેમાં "શદિદુઃખિચાદાગ્નિબોધ;" વાળી ક્ષાત કોઈ ગુણાંતા કાંચે તેમને પ્રેમ ડાતો, નેમે માગવા તે જથ્યા ત્યારે લેનું બારતું બધ હતું લેખો તેમને અવાજ કર્યો, ત્યારે તેને કહું "એ જાતિની નીદિદ્રા કરાયિકરેલું;" અને અન્યો એમ નોંધે હૈ. વક્તું, કન્યા (પ્રથમું મજરીને લેના અમાત્ય વૃદ્ધિયાને કેતરીને "કરવટી"ની જારી (શાખાવનાર મુખ્યમોહના) જાપે પરદૂાવાને એ કિંબદતી પણ તે લિંગને નાણે હૈ. એ ત્યાં એ પ્રશ્નગી અન્યાની માન્યતા હૈ કેમ જગ્યાય હૈ.

આ કુમારશીખર નામનું મહાકાલ શિવપુરાવમાંથી કાલતેય નામાંની ક્ષાતામાંથી રહેતું હૈ. આ કાલ કિંડ કિંડ પવર્યમાગા શબ્દયુભી શ્લોકો શિવપુરાવમાંથી કાલને લીધેલા હૈ. ^{૨૧} શાકરપાર્વતાના વવાદના પ્રલગમાં | શવપાર્વતી હેમાલયના શ્લોક બીજું ^{૨૨}પ્રદ્રષ્ટ નામક નામરમાં પેઠાં તે વધ્યે દર્શનો ત્યાંડી નગરજનોની જ્ઞાનોના જુદા જુદા શશ્વતના વર્ણના શ્લોકો હૈ. તે રહ્યુંવાના છુટા સર્ગમાં અજરાનાના લેવા પ્રશ્નગના કે લેજ હૈ, એથી એમ અનુમાન યાદ હૈ કે કાલિકાંગ પ્રથમ રહ્યુંવાનાન્ય કુથી પણી આ કાલ કર્યું હોય ^{૨૩} જિતો આ કાલ વ્ય

૨૧: પ્રચારાવના પૃ. ૩-૪

૨૨: પ્રચારાવના પૃ. ૩-૪

૨૩: પ્રચારાવના પૃ. ૩-૪

अत्यंत रमात्रिय वोर, शूगार तथा शंति रस अने नीतिथी अरपुर
 २४ भाल्यनाथ सुनु र अने नवमा शर्याथी ८५१ल्लान१२
 खील१२१५ कवि विषेष विचारणा ५०३ छ. अनुवादक शंकृतना
 अव्याख्या छ. नेमदे नडियाद प्राठोलालाना सुग्राम अव्याप्ति
 शंकृतात्र हुविभरामनी महाद लीढी है. उल्लास नरशिंहराम
 व्याप्ति आनु लक्षणीयन क्युँ है, ते नोंपु छ. पली शर्यव१२ विष्वा-
 नुक्तम आप्यो है. जापत्तर अवमां है. ११४पुलो अव्याप्ति है.
 भोटु शुभाध्यप्रक आप्तु है. अतां लेडीनी उल्लीक विषेष
 अशुद्धयोनी अमावेश तेमां नव्यी. ते अम मानवा श्रृंगे है ते
 अनुवादकने से अ भ्रष्ट लेडी हुये. हरेक अर्गमां वप्पावेला
 मुख्यवृत्तु शुश्रानुसारी माप आप्तु है. भाल्यनाथनी ८५१ने
 अनुवादानी हावोके करे है. शर्य १ शब्दों १

"उत्तर [हसामां] : के [हसाथी] उमालयनु हेवसूमिपुरु शुचव॑य
है: हेवता केना अधिष्ठाता - अत्यांप ते ऐवो : ऐथी
उमालय मेनका ने परावाथी पर्वती : तिःनी उत्पत्त्वा१६
ऐतन अने व्यवहारना यो ग्यनी (अ. छ. जा१वी) है. (उमालय
: [हमना] अयनत्रूपः नामे पर्वतोनी रामधराज के. ते पूर्व
अने परिधम के ऐ रमुकोमां पेशीने पूर्णीने मापवानी है
ऐव ऐवो रौलो है. "

: अमां उत्पत्तात्मकार हे तेमां अ. अर्गमां वक्षुधा।
 उपवास वृत्त है. कुठुक उ-इवल्लु अने कुठुक उपे-इवल्लु वृत्त है.
 लेनु अक्षय पौला अने द्वीप अरामां उ-इवल्लु अने वीज अने
 शोथा अरामां उपे-इवल्ली/माइक उपलत वृत्त आनु" पशी माप
 आप्तु है. :

आपां रेजिस्ट्रेशन अवां विवरण त्वंक है, भोटेखांगे ते
भाल्कनांथे आपेक्षी टोकाने अनुसरे है, पेहला आठ सर्वीजां वहे
ज वे प्रमाणे भाल्कनांथु अनुसरा है, पृष्ठ अट्टक तर्ग १ इलोक ४
: अं छे तेमः भाल्कनां आपे है, ते अद्दी अर्थश्टा नथी,
पुर अट्टवा, याने परामे अनुवाद अरण गनत्^अने वहें प्राचीरी
वाल्कुली अने नीरव अने है, के शब्दों अट्टें आधान्य वाचक कोठपां
जलन्दों समजुलों वगर ज समां है है, तेमों विवरा अधीय
आपवानः पर्द्धांत अपनावी है, तेमों प्राचीन - शान्त्वीओनी
पर्द्धांतु अनुसरा है, वा विवरा अट्टक रीते अव्याप्त कर्में। २।
शान्त्वीओने ते गुप्तांत्रित है, वा पर्द्धांत आ अनुवादमां ओछे
वते अद्दी वधिज अपनावी है, आज तो गव अरण प्रवाली, प्राचार्यों
अने तोरन मालक थेय ग्राम डोय ऐ पर्द्धें कराय है, जे
गांधीचुगनों प्रबाल है, के ते उन्होंने पुर वत गव लये है, तो
कोठ अव० एक अठाकोठ जेव। जेकाज वा अयमां यथा शक्य वधिज
कडीडेवार्तु पर्द्धें कर्मांत्र वालित्यकार संगी^अगव पा ल लये है,
गांधरमां शाश्वर अरवाना। प्रयत्ने कर्मों ते अरवयमुं अने वंकुल
अने है, अहों गतन अरवता करता विषयनी विहवता पुर्व
रव्यान पर दियान वा है है, कालहास के अरण वालत अने
विषयमय शक्ती वापरे है तेमों आज गांवी विवरण त्वंक
आइजरी शक्तीनों ऐसा आय लेय नयी, जेथी विवें डान
पहोंचे हैं,

इलोक ४नी ४१६ अर्थ इयो है, "अमे वहो ते उमालय,
अप्यराजोनी विवाचनी आसुष्योने विप्राहन करो आपनारी अने
मधोने अडोमां वहेयानेका रायवाली विहुरांत्र धातुनी भावनाने,
जो अकाल शंखाने : शंखाभत् प्रे प्राप्त घेली शंखाने:
धारण करतो डोय तेम पीताना शंखोरीथी " १२३ करे है, "

"मात्वनाथ आ। वरेषणो। हुमालयने न वागु पाउ ले अने
राजवलान। ऐ अर्थ करे हे ते यडी आग्रह नथी। शब्दोऽप्य
अविमात्वसंधि, अर्थ करे हे, परं अविमात्वनो सिद्धिगोन
नाम ले। संधिगोन नथी। " जावेलङ् " नो नत्तम्पापन्त्रीत
अर्थ करे हे, ते रुचकर वागडु नथी।

शब्द १३ "अभिरजायो, वामतेय पूर्णान्ति इक्षवाची
ः उत्तरवाचीः कै ती शी उत्तरवाचीं यडनां (उत्तरो लेवा धीरा
वाल्लपां वामरो थी) के (उत्तरवाचन) (गारदाव ले प्रकारनी
संहाने अर्थकु करे हे) ; राज्यो एवं वामरना। विडनोवाची ठोथ
होः। अहं धात्वर्थः इक्षवाचीः न आपत्तां "उत्तरवाची"
जेट्हु न आप्यु छोत, तो अनेकोडो उत्तरां सरण अनुवाद
वारे अरण अनन्। शब्दोऽप्यगां भोरनां पिंगे अलां पालां
भौत्तु न अप्यनामी" : (किन्तु दिवापिड यह) : क्युँ ले ते
नोरण लागे हे।

शब्द १४ लात उष्णगोना वाच्य झुटता वाको
रहेला के (उत्तरवाचनो उपरना अरोवरपां उत्त्वन थयेला)
कमाने नाये इत्तो चूर्य जिमा मुख्यवाचीं (उत्तरो शोलावे
ह), (अधृत् चार्यना भडाथी पा जिमा उत्तरो परनां कम ले
चूर्यपां उपां अलां (उत्तरीथी खोले ह). किंतु दृष्टवा नीवा
मुख्यवाचीं कमनीथी जावेलानो नथी) वाप्तु उपां दृष्टव्यी पा
जिमु ह. अम ज्ञो उत्तरास्थी क्ले ह. गाटे जेमन्तु नृष्टु वाचित्व
युक्तले. :. अनुवाद यरह ह. पा ऊसमानो उपरो वित्तार
ले. ज्ञो मात्वनाथ मिताक्षरी प्रयाव आपे हे, वापांतरन।
हेहमां चयो चयो आवो जाने अयुक्त तो प्रमाण अहारनो
वास्तव असु अल हे. अहु तो युहटीपां लेनो उल्लेख करी
शक्य. ते शीते अनुवादने शरण अनावोने अ विद्वत्तान्तु

प्रदेशीन १२० लाख। रेखांचल भागमां जेवी १४६५ घने हैं।
क्षेत्रों के राजमां : जेटले पर्वती मुद्रा के पार्वतीमाटे प्रथम
पार्वती नाम पार्वती : अने क्षेत्रों के ३५८० लाख। उपर्युक्तः
 ११ विकासार्थीने अनुसरती शर्थीन गायन। पूर्णांनांकांड जेवी।
 ऐसे विकासार्थीने नकामा है। जेवीना प्रवाहने गुच्छे हैं। पा
 ए अनुवादने वालीनकामा पर है। १५०६ ३६५० नगोन्नहल्ला
 (जैरावतामा) डार्थीको तथा क्षेत्रीकुं (रामरामा, इ. : डेवी)
 ऐसे क्रियमानों परी पर जेवी ज है। १५०६ ४४ "पशुपतिना।
 असमां के लाल छोय तो विषय राजत (नक्षी) पार्वतीन।
उत्तराखण्ड - जोटलाने जेटले अभिरामाथो डेशन। (प्रथमाने
उत्तराखण्ड करे - अ ८८ रेखांकितपदों प्रवाहसुअत प्रवाहो
 अर्थ अपतरं नर्थी। तेनो विकासार्थीमा है। (अथवा ते
 पशुपतिन जोवाने लाई निवेशज्ञतामी) (अथवा करनी नर्थी।
 भवत्वपदे के लाल छोय तो वाल अने अकुल वालाना के। जेतुं
 असमान छोटी हीधा वगर रहेनहो। आइं कोल्यादिग नामनी
 अर्थात् है! अ। प्रवाहसुअत अनुवादकने जरी लाग्यो है, कारण
 के अनुवादमां चरणता नर्थी। अ। अपूर्वाय विकासार्थी उत्तराखण्ड
 करने पाए हैं। अ। अनुवादमां तो से विना पर अर्थ ३५०८
 था। जबो नहिं। १५०६ ५० "महिं उत्तराखण्डित्वं विवाही
 योतानां पुराने पार्वतीकुं ग्रहों करवायों उत्तराखण्डी श्यो, नक्षी -
 जोटों ज अर्थ है, अराध्य पा है। पुरामां उत्तराखण्डी भाटे कोठ
 शरण्ह नर्थी। जेवी ५६ जामिन् - महाल अवालकार्थी -
 शुभय नर्थी। अर्थ-२ देवीकृत अवालकुं अवालना अवालमार्थी लुद्दों लुद्दों
 अवधानोमाटे लुद्दोंलुद्दों शान्त्वोमार्थी अ। १२७५ उत्तराखण्डी
 है अने अमनुतीपन दीर्घसूक्ति अनावा है। लेमां शान्त्वानन्तु दर्शन
 थाय है, पर से भा जेज शाव श्वाह है। अनुवादकनों पुराने चुनक

रीते रजू के ऐसे नेटु कायपुँछ थहूं लेन। कथने उचित
क्रवित प्रयोग अपवाह जहर नहीं, अतीत अपवर्त डोय
को ले वैदेशीप्रयोग लोये। श्वोड १४ ज्ञे १७ ब्रवा नमुन।
ऐ. श्वोड १४ के अवन् तमैः (विषाणुकार्य)
प्रतुणोन। पा फला छो. : अधीति (प्रतुणोने पाणी तर्पन क्रव।
बोव्य ऐ. उकादे हेवोन। पा हेव ले. : अधीति हेवोन। पा
पुज्य लो. : अने परथी पा पर छो. : अधीति लवोनम छो. कुरु
ले ३

उमिक्कोमूः परः इवर्दि; वर्णवृषभः रुद्धं गन॥।
ग्रासश्चः परातुष्ठः श्रीरात्रा वर्णस्तुः ॥।
पातः परमद्यार्द्वित्तुमित्तात्तुष्ठः परः ॥।

उद्धवान्नापर्ति दिविद् धा मङ्गा का परा गति॥।
उद्द्वयथो परम्यथे ले, वर्णथो पर मन छ, मनथो पर लुट्ठि ले
लुट्ठिथा पर आत्मा ले, आत्माथी पर लुट्ठि१२ (अव्य अनः) ले
अव्य अन्तर्गत पर पुरुष ले अने पुरुषथो पर वीर्जुं कर्त्त नहीं, ते
५।७८ (लेख्वांसोमा) ले. ते लेख्वांसोमा ले. तथा तमै
क्षप्रवपातन। गाँदन। पा छ०। छो. विषाणा वेष सामापि
माटे रेखां१६ अनुवादमां लक्ष प्रवपत्तिमे ते नकाम१७ व अ३४
अ३५। ले. ते विषाणा गाँदाथे नर्थां१८ आम मूलनो अर्थ
हृषिकुम्हो अने असराण थाय ले. श्वोड १७०१ पा ऐम ज ले. आ१
सक्षम वधान लगोन। अनुवादमां आम१८२ ले. सर्वे उभा१८३ पा ऐज
दश। ले. पहेलो ज श्वोड आ१ रीते असराण अने ले. श्वोड ४८०१
पा१ ऐज ले. श्वोड २४०१ ले. “ज्ञे को ११ न१४१ गंगाधर्मा छोडीने
नकारा शरीरवारा पुरुषे रथन करेलो को११ न१४१ यक्षा प्रत्ये जव।
तथा१८११ के ल्यारे हुला१८५१ ल्यो : भुगीभुगीः मुख वडे
हुः खन। नकारा१८५१ अने मूडे लेख लुर्ह इक्षवाचन कावने उल्लिधन करी

कुण्डे रक्षय करेली उनार [६३१म] ज्वा साटे तेयारकी थयो
त्यारे हक्षय [६३२] प्रेताना आग्नेया भाग्यदो वायु
लोडवा वाणी : अथर्व देवार्दि कल आग बीनजडरी थे:
४५८ ४१ तार पक्षी लताना जेता वेलाधिसना हवा रहेको
अने डाया माता वधन्^{२८} रेखेली चेनान छडीवालो नही -
पोटीयो मुझमा राखेली ऐकु आंगाहीनी चान "अप्ता पुँ
नकरो" श्रेम्पुमध्यार्दि : भूतः गारिने शायाभय हेतो इतो.
वगेहे अठां नहीनो अर्थ खोल्थो नथी, ते नायनो गत थे.
पोटीयो डायामध्यधर्म शोनेरी ७५२ राया शके नहीं ते
मुख्यर अंगां मुडीने हसारत करो शके नहीं. ४५९ ४८८
बायामिका जारम्बुतहुङ्गम् नो : "जानो धरो" अर्थ अपूर्व
हे. अर्थ ४ श्लोक ८ "हेकुभदेव" नामना हिटा प्राप्त
हो.

(ગોપ્યરાસાદિવૈતુ) મેધલાના દોરાથી પંથનને રમણ
કરો છો કે? અથવા પડતા પરાગથી દોષખુલ તમારાં નેદ્રો
થાય તેવાં ભાર્તી કાળનાં કષમાનાં તાડનને અમરાં કરો જોતું
બહું અન્યથ અમરલ હો. કોંસમનાં પછોનો અર્થ નિર્ધિષ્ટ આવે છે.
જ્યાંક ૧૬૫૦, હૃતીની જગોને (હૃતીનું કામ કરવામાટે)
અટાણાકરો, જ્યાંક ૧૮૫૦ રાતખંડા માટે "રાતખંડાયણ કુશળ"
કર્યું છે. જ્યાંક ૨૬૫૦ "ચતનને હુઃ અ થાય તેમ કુટવા વાગી"
અર્દુદર અભિભ્યં જત હો. જ્યાંક ૩૪૫૦ "ચલાયની" નેડાણી હોઈ
શે. જ્યાંક ૩૩૫૦ કિસેનીરષિ માટે "વિષેક વિનાના
પુરુષો" એ અનુવાદ હોટો હે "ચેતનાણીનોઝ" અમ બેઠાયે.

શ્રીમદ્ ર્વાજ "જુદેનાં" કરતોથી પૂર્વે કરેલા પ્રકારે
અત્યંત નમેઠું તે પાર્વતાંતુ મુખ કૃમજની (શોભાને ધારણ કરતું હતું)
: ક્રૈષ જુદેનાં તાપથી કૃમજન્માન ગતું નથી પૂર્ણ (વડાં પામે છે
તે પ્રકારેજ પાર્વતાંતુ મુખપ્રકાર પામહુ હતું પરંતુ બેનાં એ નેદ્રોની
પામેનાં (એ નેદ્રોની વર્ણાં પરિપૂર્ણાં આગમાનાં) ભાગથી

કાળાશથી ધોરે ધોરે રથાન કરાયું, અર્થात્ કાળાશ આવી.
 (કારગે તે ભાગ વધારે કાળો હતો;) અસરલતાનો નમૂનો ૨૫
 છે. તે પ્રસ્તાવથી આવે છે. એવા નમૂના બીજી પણ ધોરા છે.
 ૧૫૦૮ ૮૪ અહીંથી બોને જૂદ્દી હું : ઐમ બોલતી ચાલવાના વેગને
 લીધે: જ્તન પરથી ખસીજતા વચ્ચવાળી તે બાજા - પાર્વતી
 ચાલવા મડી. વૃષભના ચિહ્નવાળા શેંકર પોતાના ઇપને પ્રગટ
 કરી ઉલ્લેખોપડીને પાર્વતીને આવતા હતું ^ઈ એકદરે સાંદું છે.

સર્ગ ૬ ૧૫૦૮ ૧૪

"શેંકર પાર્વતી પ્રત્યે રથાન કરતા હવો" અસરળ છે - સખાંબિંદૂત
 શેંકર સ્તુત અને હિમાતયના લગરના વર્ણના ૧૫૦૮ કો વગેરેમાં
 પણ (૧૫૦૮ ૩૮, ૪૪, ૭૧, ૭૨, ૭૩, ૮૩, ૯૪, ૧૫ વગેરેમાં
 પણ) એ વચ્ચાં રથાનાર છે.

સર્ગ ૭ ૧૫૦૮ ૭ "તે પાર્વતી એ વેરાખોલા ધોળા
 સરસવના જેવા, દૂર્વિંદૂરથી વિશેષ શોભાવાળા, નાભિને અતિ
 ક્રમણ કરનારા, હિરાગળ વચ્ચવાળા, વાણશ્રદ્ધા કરેલા,
 સાનના વેશને શોભાવતી હતી. આમાં ગોપબિંદીથિયે/નિ;
 ના અર્થનો વરાયર અને સ્પૃષ્ટ અનુવાદ નથી. ૧૫૦૮ ૪૫-૩
 "ચતુર્દાનિમિતુર્યા" ચાર થાંભલાવાળા ધેરપ્રત્યે" - અહીં
 મુજબાં ધરનો ઘ્યાલ નથી. હિરાલોકપાલો અશવયના ચિહ્ન
 અદ્ર, ચામરને ત્યાગકરી નાથવેશવાળા થઈ તથા દર્શનમાટે
 નાનાને સંશોકાતા (અર્થાત્ અમને શેંકર દર્શન આપે ઐમ નાના પ્રત્યે
 હુઠથી કરેલી ચુચનાવાળા અને તેથી): નાનાએ જેમને હેણાડુયા
 એવા : એ ઈ-કુદ્દ પ્રશ્નામ કરે છે, આર્થિક પ્રશ્નામ કરે છે, એ પ્રકારે

૨૫: ૧૫૦૮ ૨૪, ૨૫, ૨૬, ૨૮, ૩૦, ૩૮, ૪૧, ૪૩, ૪૪, ૪૭, ૫૪,
 ૫૬, ૫૮, ૬૦, ૬૨, ૬૪, ૬૬, ૭૧, ૭૫, ૭૬, ૭૭, ૮૦માં ૫૩ એવુંજ છે.

क्षवने ज्ञानेवाः लाभ बेठा ते शंकरने प्रग्राम करता हवा।
अथवा देवोंने निर्मने चंद्राक्षवाथी, निर्मले शंकरने ऐक्षवाथी,
शंकरे उ-डाक्षत वामु नेत्रु त्यारे शंकरने ते देवो प्रग्राम करवा।
वाऽयाः प्रस्तरो अन्वय शेखीनो या नमुनो हे। ^{२६} शबोकं ६१
"ते येउ शंकरपर्वती, शधयोभां मुण्डप्रथ वधयोभां रस
प्रभां शुशोवाही प्रग्राम करेवो किंश्चित्यां वृत्तिशोन। वेदवानु
(भूपाते कड्यु हे) ३ - *कृष्ण*

गीहिगीहवाहु शुंगारे क्वै शिवे हु वासनारी
रीढ़ वीजसारोद्विति नियतार जटी शुः।
शुंगारापिषु धारी। एके हृष्टा हु धारती॥

तथा

गीहिगीहवार(म) टी जैव वासनारी धारती रपा
गतसद्गो शुंगारी त्रेषा इतामु नादम् प्रतिपिठ्ठम्।

अट्टे शृंगाराक्षवाथ्यम् की(शकी), वीररसमां सात्त्वती अने
शोड तथा ^{प्रभुत्वा} रसमां शंकराम् वृत्ति हे, तेमन। शृंगाराक्ष
भाव ज्ञानारु पुकुषोंके शृंगाराक्षवाथ्यम् भावती १४८ गणी हे,
तेमन शीक्षकी, शंकराम्, वात्तती अने भावती अ थार
प्रकाराम् वृत्तयो नादम् विदे रौली नववी) रक्षोभां,

कृष्ण उत्तम शुंगा रीढ़ वीर गदापतीः ।

पीठगदाद् शुंगाराव्य रक्षोभां उपा हुला;
अट्टे शृंगार, डाक्ष्य, कुमुख, रीढ़, भयानक, गीरत्वा अने
शंकर अ नामन। रस पूर्वे था गच्छेत। वेदवानोंके क्षेत्रा हे;
नियमधी प्रवत्तविवा वशन्त वशता ^{२७} राशोवाहुः; अट्टे अ
रसमां अ राग एक्षो ते तेमां पूकेलोः ^{२८} काष्ठे कड्यु हे के

लौहेदुर्ले तथा वीरे पुराणों प्राचीने ।
हिंगर हात्य रुणः स्त्रीरागों प्राचीर्तिः ॥
भानै व दीपत्ते शास्त्रे गैयो नमुनै ॥

१८६, अद्भुत अने विरक्षमां पुरुषन् ॥ राजथी गवाय ले. शृंग । २
अने कुमार रक्षमां चर्ची। गवार्तु कैहु दे तथा भयानक वीभत्स
अने शति रक्षमां नमुखङ रागथी गार्तु ऐसो) अने भधुररीति
अने प्रथम ऐसे पहेवहडेहु ज उव्वश । ६ अप्परात्मोर्तु न । १८५
मुकुर्तवा । २ जेता । ५ वा.

(वगतवा । २ एवं श्वीय वगतो आपवाना लोभने । १८६),
जे तेव पूर्ण के नदीष नथी, आपामां भूलो ले. अय । ५ १८५
रह । पूर्ण गच्छ के, क्रौठ नानकडी नहीं ऐम ग्राटी अण्डराय ।
अटवा । ५ व्य तेम अर्थ अटवा । ५ व्य है. वे (वहवत्ताज अतावत/। ५)
उत्ती लो ते प्राहटीपमां शोभत.

सर्व । १८६ । ५ अ ३० "हे (प्रथे अकामो इपातो)
दद्वगनो श्वामे सुवे शील लागे लाव हेलाता तारानेवनी
शोभा ऐको कमलोनी शोभा (वचारीने (ऐसे कमलोनी
शोभाना व्याने राके तारे नेवापी कमलनी शोभा आववत्ते
ऐम (वचाराने) ऐम प्रत्यक्षाज वथते श्वावा जगतने जेहुरे तेम
दद्वगने उरवकरे ले. (अथत् जगतनी अत लावो (ऐम) श्वावा
निहावश याय तेम दद्वगनो अत लावो पोते अस्त पापे हो).
भ । ५. ऐज शेवा, अने ऐज प्रवल । २ ले.

१८६ पर हे गुद्धम तनुवाणी पावती। श्वावे अनावेला
अन्नप्पत्ता । ६ (पूर्वोमां सुशमतावाणी) ऐ चाचप्रथम कहेली
हे ते संध्या । ७ इय जने अन्त पासती वथते शेवाय हे (पूर्वय हो)
ते कारवाही हे मानवाणी ऐमानवाणी पावती! मारो आ
संध्यामां आहर ले. "तेन" पाणो पुराणो उवाळो आपो
पर्याल लीटीनो (वश्वा । २ क्यों हो) हे. सुतनुभाटे रेखांकत आवत्तं

सर्ग ८ श्लोक ६५ने अनुवाद आहे ले. पाठीअवेदी
 कृतिः (प्रथगुः न इति जेवा लालवाणा त्रिविषाः
 कृतिः) मृगमां लेप आकृश गृह शरोवरना नगवाणा
 चक्रमध्यं पदेवा (विषयी लग्निषी चक्रवक्तु एव नेत्र
 शेतराथ ले : अथर्व चक्रवक्तु एव जगमां पदेवा चक्रविषये .
 पाठी अवेदी इतिनांतु इति माने ले, कारण के ले : जगमां
 पदेवा चक्रविषये : अत्र अर्थर्थः पञ्च इतिनां इति नेत्रं जग-
 तु ले अथर्व ते पञ्च जगमां पदेवा चक्रविषयमां ले इतिनां।
 पाठी कामां में हेताथ तेस नाथी, तो चक्रवक्तुगत ने
 तो से ऐह क्यर्यां जायक अनेकेथी ते चक्रना जगमां पदेवा
 प्रतिविषये इतिनां तु पाहुं काम धारा आवा जतां शेतराथ ले.
 आठनं अर्थं भालवनाथ आव ले :

पदेवा इतिनां इति जेवा आकृशमां अने
 शरोवरना जगमां (विषय प्रतिविषये पदेवा लालिनवाणा चक्रे
 एक विषयी धौ अत्रे रैवा चक्रवक्तु लेडाने अनुसर्यु ले. ऐसे
 आकृशमांतु चक्रविषय अने जगमां पदेवा लेनुं प्रतिविषय ले ऐसे
 समसामां धौ लेटे ऐसेवा चक्रवक्तु जेवा जाय ले लेतु ले.

अहो भालवनाथनो अर्थ धौ लारो लागे ले.

अनुवादको हुराहुष्ट अने प्रस्तावी ले.

अनुवादके ३-१७ सर्वोनोचे अनुवाद कथो ले. मोटा
 भागना विहवानेने भते अे कालिकास्त्रकृत नाथी. तेथी, निरपेक्षरीते
 पद भाव कालिकास्त्रां कक्षाती दृष्टेवे विशारदां पद ते
 कृत कालिकास्त्री लागती नाथी. वस्तुविन्यास, शैलीनी
 अपवता, वालत्य नाही असाऱ्ह, अमुष्ट प्रयोगोपाद्युष्ट
 प्रयोगो, अलकार्तु योहुं हेषातु वालत्य नाही विवाह
 कृतां ते अकालिकास्त्रीय लागे ले.

જ અનુવાદમાં પણ પહેલા આઠથર્ડીમાં એ શાલી, માત્રાર,
અસરલાટ, વિહૃવતાનું પ્રદર્શન કરીએ હેબ। મળે હે સે આ
૬-૧૭ રંગોમાં પણ જેવ। મળે છે. સર્ગ ઈમાં કલોક ૧૦, ૨૫, ૩૨,
વગેરે, ૧૦માયા કલોક ૨૮થી અગ્રા, ૧૧માં કલોક ૨૩-૪૨
વગેરે, સર્ગ ૧૨માયમાં ૧, ૭, ૧૧, ૧૬, ૧૮, ૨૫, ૨૭, ૨૯, ૪૨ વગેરે,
૧૪માં ૫, ૧૪, ૨૬, ૩૮, ૪૦, વગેરે, ૧૪માં ૪, ૫થી, ૪૩
વગેરે, ૧૫માયમાં ૩૦ થી ૩૮, ૪૩ વગેરેમાં, ૧૬માયમાં ૧૧,
૧૭, ૧૮, ૧૯, ૨૦, ૨૧ આટેમાં, ૧૭માયમાં ૧૩, ૧૪, ૧૫,
૪૦, - ૪૩ વગેરેમાં એકોજ પ્રદર્શાર હે.

પરોક્ષભૂતકાળની અનુવાદ કરતો હેચે એક બીજ
લખેથતા ઘલાવી છે. તે પામતી હવી, થતો હવો, થોથતો
હવો, પ્રાપ્ત થતી હવી. કરતી હવી, થતો હવો, આજા
કરતો હવો, તપ્યાસયાં કરતા હવા, ત્યાં કરૂણી હવી, વહૂર
ટો હવો, લેયાર થતા હવા, થયન કરતા હવી, નક્કે કાઢતો
હવો જાણે રૂપો વાપરે છે. નુંની પણ્યાતનાં જા રૂપો
ચરા ગુજરાતોમાં તો ખરકે લેવાં છે, જામ જા અનુવાદ
શામાન્ય, પ્રસ્તાવી, વિહૃવતાના આઇઝર વાળો અનુવાદ છે,
શરળ, દ્વૈયગામી, ગવ પુરું પાડતો નથી. અમફાલીનોના
ગવનો લેમજ જેડળી (વધ્યક ચથ્યતની) વિશ્વાં કરીએ તો પણ
જા પરિચથ્યતનો બગાવ કરવાનું મુશ્કેલ હે. ગોવર્ધનરામ અને
માનુલાલનું શલીકાર તરીકેનું કાચ્યાને પડે મૂક્તાં જ તે
વાત સમજ્ય છે. જ્યી લેવો શાખ કુલ કે પાત્રતી - પાત્રતિ
તરીકે લાય તે અગ્રાય - અસ્ત્રય જ હે. અનુવાદ વિચિત્ર અને
ચુંની પુરાળી પદ્ધતયે થયો છે.

તનમનીશેકર લા. શિવ - ૧૯૨૩

"ગુજરાતી" સાપ્તાહિકના તે વરસના દીપો ત્સવી
અંક : લા. ૪. ૧૧. ૨૩: માં શ્રી શિવે કરેલો કુમારચીવના પાંચમા
સર્ગનો અનુવાદ પ્રગટ થથો છે. અનુવાદક પોતાના પત્રમાં
જ જણાવે છે તેમ તે તેમની સાહિત્યકાર તરીકે કારકિદીની
શરૂઆતના સમયમાં લખાયો છે. તેથી તેમાં હીક હીકકાર
રહેવા પામી છે. નમુના શ્લોક - ૧

સ્થયક્ષ બાળી દા કામ એ રીતે,
મનોરથો ભાંગો જ નાખતાં (શિવ),
ગેરિરસુતાએ રૂપનિંબુ ઉરમાં,
પ્રીતિ છલે પ્રેમિની તેજ ચાડુતા.

અનુવાદ સામાન્ય જ છે. ગ્રિયેષુ સીમાગ્યાલાઃ હિ બાદુતા
નો રેખાંકિત અનુવાદ અતાવે છે તેમ નિર્ણય છે.

શ્લોક ૫

શિખામણે એ દૃઢ પુદ્રીને જરા,
શકી જ મેના તપથી નિવારીના,
મનોરથે નિશ્ચયા સન્નથ ચિત્તને,
નીચે વહેતુ જા રોકી કો શકે?

પૂ. ૧-૨માટે મૂળ છે: નિશ્ચયા ઈચ્છાવાળી પુદ્રીને મેના
તપના ઉઘમથી નિવારવા શરીકતમાન બની નહીં "તેનો
અનુવાદ સામાન્ય જ છે. પૂ. ૨માં સન્નથ ઉમેરો છે.
રેખાંકિત પ્રતીપથેતુ માટે છે. તેથી નાણું.

શ્લોક ૧૧

કીધો લુણા ઓજથી ને ઉરોજન,
પ્રલેપથી રક્ત દડાથી નિર્મુળ,
સ્વહંસત ઝુદ્ધાક્ષની માળનો સાંચા,
ક્ષતંગુલ જેની કરે કુણાં કુશ.

विशुद्धरागाद्

रेखांकन १ कुमारकेशव २८ नवीन

३. २. "जेनो अयलीनो कुमो हाँ धा करे छे" २८
छे ते अस्यष्ट रहे ४. ऐकदरे "ठीक" ४.

स्क्रोप १४

आत-इ ऐसे (नज जतथी वध),
धटकने पीछी लगु उल्लेखां,
नाह ज जै (शशु चमान मातनी),
धरी रहे ओझी कहाप्ये प्रोति.

रेखांकन २ कुमार पर मृथम जन्म पालेकां तेमना प्रत्येतु
पार्वतीनु युवती त्साल दूर करी शक्षे नडो। त धर्म
अस्यष्ट रहे ५. कुमारनो उल्लेख नथी,

स्क्रोप १५

पावन थठ सानथी हेवी बाहुत
धारो सह वहुव वेह पीछती,
—लुप्यथ चावा ६ गारल निकाला,
गायथ नाठि वय धर्मवृद्धन।

रेखांकन १ कुमारगवेशद् २. लघुताञ्छालंगकलीम्

३. अदीपिलिम् ४. २८ छे पुरो अर्थ २७ उरते नथी.
हेमके पर्याय योजना ५ (नवीन दे). भुग्नु वरी-शपहु लालित्य
पा अर्णु पठी वय दे. ६. १८ २८ उर्मु पड़ु छे. ५. ५
नवीन दे. "धर्मवृद्धाम" वधारे जाहु थात,

स्क्रोप २६

मृतालक्षी गालती कुमीकायने
काठु अवा दिनरातना तमे,
—प्रथमां शुद्ध शैगथी कथी,
तपोथीः दैः हुर अल थठ उथा.

रेखा०(क) अ॒त अ॑क वर्णसंगठ मा॒टे हे. पा॒ अ॒शुक्षम ला॒टे हे.

२. दूरमध्यहकी॒र मा॒टे हे. लै॒पा॒ तूटे हे.

अनुवाच पा॒ लै॒ला॒ हे.

ख्लो॒क ३१

लै॒ उभा॒ अ॒र्थन आ॒ता॒ पूज्वा॒,
अ॒र्ता॒य आ॒पै॒ गै॒ म॒त्ता॒नथी॒ म॒हा॒,
आ॒त्ता॒न तौथै॒ जै॒ शै॒ष्ठनी॒ प्र॒ति॒,
आ॒त्ता॒प्र॒वर्ते॒ कै॒रा॒ अ॒त्ता॒नथी॒.

२५ मूळ हे; तेनी आ॒पै॒ अ॒र्ता॒थप्र॒त्यै॒ अ॒शुक्षमन्तुष्टुवै॒ लै॒द्वी॒
उभा॒ पूज्वा॒ सामग्री॒ लै॒पै॒ गै॒, अ॒मता॒निवै॒ष्टै॒ अ॒शुक्षमात्ता॒योर्तु॒
पा॒ वै॒श्वै॒ व्यै॒ अ॒त्ता॒ पू॒त्त्वेन्तु॒ कै॒री॒ गै॒ रवपू॒ डो॒य हे. - ते॒
अ॒त्तु॒ जै॒ उत्तरे॒ हे. रेखा०(क)त्तमौ॒ अ॒न्वयै॒ वराण॒र नथी॒. २५०
अ॒शुक्षमै॒ हे.

ख्लो॒क ४५

अ॒मो॒रूथा॒ वा॒ अ॒त्तो॒ अ॒वै॒ अ॒त्ता॒,
. वै॒ शुरौ॒यै॒ तु॒ज ता॒त भ॒म्भा॒,
वै॒रा॒म, या॒हे॒ प॒तितो॒ अ॒मा॒ध्यथी॒,
शुरौ॒शो॒धा॒य जै॒ शो॒धत्तु॒ नै॒.

प. २ पितृ॒ प्रै॒दाः॒ तयै॒ दै॒वमू॒ष्मा॒, मा॒टे॒ हे. ५११

बै॒द्वा॒ति॒ अ॒य हे. रेखा०(क)त्त मूळनौ॒ तुलनायै॒ "ठी॒क" ज.

ख्लो॒क ४६-४७ तु॒ शो॒धलाँ॒ हु॒र्वै॒ डो॒य तो॒ छै॒कै॒ ने॒ ने॒
वै॒याने॒ "शो॒धत्तु॒ तो॒ हु॒र्वै॒ को॒ऽ ते॒ उ॒ये॒" वै॒यारे॒ मुवानु॒रारी॒
अने॒ ला॒टु॒ शा॒य. ख्लो॒क ५२-४८०

शरौ॒र लै॒यै॒ नै॒ यो॒न्यु॒ अ॒ तै॒मै॒" ने॒ बै॒द्वे॒

शरौ॒र यो॒न्यु॒ नै॒ तै॒यै॒ अ॒ तै॒ - पा॒ वै॒यारे॒ ला॒टु॒ शहै॒ शके॒.

ख्लो॒क ५८

कै॒ ने॒ पा॒डत चै॒व्यै॒पी॒ तो॒,

न हातुं प्रेषी जन आ हु जातो,
स्वष्टि इत्थी थोतरी चंडभी लिने,
वहती मुख्या हुम् जाम कीपीने,

रेखांकन २-३ मुन्हें क्त छ. २. गांधीजी ५१२
क्ते छ. ४. सवालकाला ५१२, ५. रहयि
५१२ छ. ६. वसारातुं छ. नवली पर्याय पर्सेंटेशनी अनुव १६
पर्यायेवो ज्ञाने छ.

४ लोक ५१

सभी भी जेवाती हुगे जो लयो
तम् तवां शम् पाम्हे कहा,
न जहुं ऐ हुक्कम् रे य कोपगा/
चुक्की भुजेरे थती जेवी हिक्कना.

भूम छ: "तपशीकृत अनेकी अने तेथी आ। सभीओ वडे सातु
नथने जेवाती आ। पावती पोखार्हु हुक्कम् प्राप्त श्यारे
जेम अम्ब अवश्यक्ती पाठायेकी भुमि ७-८ : १०५ : नी अनुशुद्ध
पाम्हे लेम, पाम्हे, ले हु जाती नथी." का "भूमि" उत्तरास्थाने
ना करी सः (शक्ति) छे ते अद्वाठने अहुं पावती करी
अने छ. भूमर्हु आ वत्य के लेनु अर्थात् रव अहुं उत्तरतां नथी.

४ लोक ५३-४५० विरक्त्याक्षरां प्रत्यायां लाला
भाटी अहु अहु गोठवीने वही शक्ति" मा रेखांकन नीरस
छ. ४ लोक ५५ भूमि छ: "(अवश्यार्ही) कहुतु ते हु शक्तने
नहु हु तु लेनी ज कामनावाही छे पर ले अम्बल
अन्यासमां रात धरावे छ. लेनी विशार करीने भने नारी
हुतहु अनुशासा करवानी उत्तरां थतो नथी." अहुं,
वहा मुन, अहु हु ने भेदेने,
हु कामना अनी वही करे उरे,

અમંગળે એહ સહેવ રાખતો,
અનુસરે તે તુ ન એહ હચ્છતો.

પણ ઉપરના જેવુ જ છે. કલોક દક્ષમાં ૫. ૩-૪ મૂળ છે:
"પ્રથમ : પાઠઃ શ્રદ્ધા સમયે સર્પવલચવતાજા તે શકરના
દોષનું શ્રદ્ધા તુ તેમ સહેલો"

અથે સહેલો પ્રથમે શ્રદ્ધે કહે
ભુજંગથી ભીષણું ડાંય ચંદુનો,
તેમાં "વલચ" નો અથ ઉપરો અથ છે.
કલોક ૭૧

પિનાકીના સંગમ તેરી કામના
કરો ધર્માં છે દુદ્ય લોચનીય આ
કલા કલાનાથ લદી ઇપાણીને
તુ લોકની આ મીઠી નેત્ર કિસુદી
શેખાંદિત ૨ ઉપોરો છે. કાનિસુકીની નો ધ્વનિ
"ઇપાણી"માં અંગુ

કલોક ૭૬

શ્રદ્ધે જનો મંગળ ક્ષેત્ર ટાળવા,
ધતાં જ વા વેલવ તેરી વાળના,
નિરિચ્છ પાતા જગની કરેશું અ
સવૃત્તિથી શ્રદ્ધા કરત શુક્રને.

મૂળ છે: "લિપતિનો પ્રતિકાંત કરવા માટે આ વેલવની
ઉચ્છાયી માલસી મંગલની સાધના કરે છે. પણ સાચાની
કોઈ કૃત્તિવિહોદ્ધા તથા જગતના શરદ્ધાર્થ ભગવાન શંકરને
અવા મંગલથી તુ?" - અ અથ અલ્પાંત જ રહે છે.

$\vdash \neg \phi \vdash \neg \psi \vdash \neg \phi \wedge \neg \psi$

સુલોક ૮૨

બહુ થયું વાદથી, ચાંદ્રિકાને જ સે
અશોષ તેવો નકી એ બતો હે,
પ્રભુકલ પ્રેરે જ થન હું તો શશે
ન કાંઈ રહ ચોડા જનો ટોકાગને.

મુજ હે: “ખો, વવાદ રહેવાદો, તમે નિષ્ઠાયાં કે તેવાં
પુરૈપુરા એ બલે છો, પા માટું મનતો સેમનંમાં એવથી
એક રચનાનું બનો રહ્યું હૈ. કેવેચાં વૃત્તિવાદાં અપવાદને
ગાળતાં નથો.” જે અર્થમાં વ્યક્ત કરતો એ મનોધર શલોકની
‘વચનાયાં આજતો નથો. તેયાંથી રેખાંનીકલ તો અચુભગજ
થાડે હે. શલોક ટ્યુફ હુમારા શુદ્ધ શલોકીમાનો જોક હે.
“તેમને નેઈને, ધૂજલાં, વેદદ્વારા શરીરવાણાં, બા કે જવાં
જિથા કરેલા જોક અગવાણાં રાજરાજ કાંના, માર્ગમાં
પદાડ આતો પડતાં વ્યાખૂન નહાનો પેઠે ન તો ગયાં તે
ન રોકાયાં.” કેમે માટે:

ચાલી જવાપગ ઉચો કરીને ઉસેલી,
સ્વેહે સંચેલી, એત ધૂજતી શાલુ નેઈ,
ચાલો નાફા, ઉબી રહો ન હિમા (કૃપુદી),
કીષેલી વ્યાઘ્રત પણે (ગરબે નહીંથ).

કે કુપણું અધ્યત્તે જ હૈ. પણ ચીજો જન્મ અને પ્રથમો જીવીની
જીવિતમણે કુચાલ વરતાન હૈ. કલોક રમે એકાન્ધાદૂદા
માટે "કુચાલ", ઈમે જારી રહ્યા માટે "મને રથોળ".
જીવાન સંસ્કરણ રહ્યું રહ્યા હતું પણ માટે "કુચ", ૧૨મે
પોતાના ડેશનાં પુષ્પોથી ચે જે કુચાલ હૈ" ને માટે "ગર્ભે કુલો
કુલથી બંગારું હતું", નિશ્ચિપ માટે જાણી રાખવા,

१३માં રવારમ્બ માટે "કંઠા", રાખિતાદરા
માટે "અંગે હટને ચુંદી" પાચ્યાં ને વહેણે "પ્રાચ્યાં",
૨૩૦૮૯ ૩૨માં કાળજીને વજુ^૨પોતે જ શક્ર હોવા હતો
તે અનુભૂતિ રાખો કે તુહાને પોથ્યું હોય. ત્યાં અનુભૂતિ
"ધૂર્જિટ" શાંખ મુકે હોયે, ૨૩૦૮૯ ૩૬-૪માં "તપાંબીઓને
પણ બોધ આપતું" માટે "તપાંબીઓને ઉપહેશ આપતું"
કરો શકતે ત્યાં, મનીષી માટે "ર્થડાત", કૃષો હરો,
પ્રહોણે, ખૂબને, જેવા પ્રથોળો, "લેરાયેવા વાળવાની
અભિનાનસૂત્રમ" માટે "શાળાંશું^૩ પરે" પ્રમયઃ લસાંદામ્ય
માટે ખડાધારો હરો, કે બધાં જેવાં જથુન હો.

અંત્ય કાલજીને જીધે, અનુભૂતિનો અભિનિવેશ
પ્રશ્નાન્ય હોવા હતો અનુભૂતિ નો રાખાન્ય જ રહે હૈ.

નાગરદાસ અમરજ પેંડયા - ૧૬૩૬

આનો ઉપોદ્ધાત વિખ્યત કવિ નવલિકાણાર
ગવાણ અને કવેચક વેહવાન સ્વ. રામનારાયણ વિરાવનાથ
પાઠકને હાથે લખાયો છે. તેમાં કાલિહાસ, તેમાં કાલ્યોની
ખૂબીઓ અને કાવ તરીકે વિશેષતાની વાત તેમણે બહુ સમર્થ
લાગી રહેતે કાલ્ય ભર્મરીતે લાગે તે રહેતે કરી છે. : મૃ. પથી:
અનુવાદ વિષે તે કહે છે: "હું સુધી તો અનુવાદકો માટે
સમર્થલોકી ભાષાંતર એજ મુજલી મૌલિક સાચવવાનો રાજમાર્ગ
જણુંયો છે. સૈચૂતમાં સમાસીધી ભાષાની ધ્યાન જ કરકસર
થઈ શકે છે. વળો વિશેષજ્ઞને પણ વિશેષજ્ઞન પ્રત્યાં વાગતા
હોવાથી વિશેષજ્ઞ વિશેષજ્ઞથી ગમે ઐટલાં છે પડી ગયાં હોય
તો પણ અન્યાને વાંધો આવતો નથી. ગુજરાતીમાં તો
શાફોનો ઝડપ વિદ્વાનાં પણ વિપરીત અર્થ થઈ જાય. શા વધી
મુશ્કેલીઓમાં મુજલા અર્થને ઐટલા જ સાપના અદ્ધરોમાં
ગુજરાતીમાં ઉતારવો એ અતિહૃદી છે. તેમાં પણ કાલિહાસ,
જે દૈક્યપૂર્ણ સાલિપ્રાય વાપરે છે, જેની ઉપમાનું ઓચિત્ય
ઉપમાન ઉપમેયની જીજામાં જીજા વિગત સુધી પહોંચતું હોય
છે, જેમાં વિશેષજ્ઞો સૈચૂતસાધાની અગવડને કારણે અકુળ જગતેને
રહી ઉપમેય - ઉપમાન અને રંગતાં હોય છે, તેનું ભાષાંતર
કરવું ધ્યાન કરીન છે.||

સર્વી ૧ સ્લોક ૧

એ ઉતારે એક દિવાનીમે, અદ્દિપતિ આતમ દેવ જેનો,
જે પૂર્વને પરિશ્યમ અન્ય પહોંચો, ખૂબીપવાન વજણું પડેલો
માં રેખાંકન અનુભૂતે હિમાલ્યાનામ અને દેવાત્મા માટે
છે. પર્યાયો વરાયર છે, પણ મુજાનું લાલિત્ય સાંચેજ આવે છે.
તેથી અર્થતોષ થાય છે.

खली ५

अन्तर्गुणे तरो असा लेखो, कीपावना उंहरता उभेथी
कुणे गुणीषे नको होष आइ, करके ठंडु [उर्द्धो मठी] शु
रेण्टिपटपटे अनुमधे तनावादन, प्रसादव तरु तिहै न तौशामुद
पिलोकियार्ह, गुणानिरापि भाटे हे. अर्थ वरावर सतां तुली वजै हे.

खली ६

गुणानो गुणम गावराने,
करावनार्ह उष्णे धरे के,
वाचव्रदगी अतो भेद अडे/
अकाल लंब्या रामी लाल धातु.

कुमालय पोताने शशरोष्टे अकाल गंद्याकेलो धातुमताने
धारा को हे. जे धातुमताने वकेष्वो तरो तेजाहो विद्या
मेत्यासाद्, लंगाद्वितीय, शास्त्रकृतो विद्यासाद्,
अ ये वकेष्वा अडो वापये हे. तेनो अर्थ हे के तेजिवांशी
अवार्त मंडनो पहेवां, अथत उमाश्वयना धातुनीना इने
वाई अप्सराओने भ्रम थाय हे के वंशा थठ गहु हे. तेखा
तेजो प्रवासन भाटे उतावल को हे. तेम करता अभूषणोने
अवार्त पहेरे हे. उपरात आ मातुमता अप्सराओने मंडन
भाटेना इव्यो पुरो पाडे हे. अबो पा अर्थ हे. यीज अंडनो
अध वाद्याने दुकांथी जेनो रताळ वर्तेगाठ अह हे अवी
धातुमता, उमाश्वय अट्टो अधो उच्छे हे के वाद्योतो तेना
अध्यशास शुद्धीज इन्हो डोय हे. अट्टो तेनो धातुमताने रंग
वर्तेगाठ वय हे. वायेज तेनो रंग वाद्योमे वर्तेगाठ वय हे.
अबो पा अर्थवाच. वंशानो रताळ अज वाद्योथी अंडित
थाय हे, जेवो पुरु अर्थ थाय अरो. गंद्यूत अपासनः शिंगत
जेना आट्टो शुद्धीलो अर्थ करवाये वार्धो लागतो नधी. पर
अल्लनाथ अम उडे हे के अंग नावानो राग वाद्योना अडोमे
कंद्रमत थयो हे अवी, जेने प्रा. ५१६६ अर्थवाचता२ अले हे.

ને વરાળાં લાગે છે. આટલો અધો અર્થે કાલિદાસની
શાસ્ત્રાધ્રાય વાજીએ * રહેલો છે. તે જેનાં લેણક લેમણે થોડોજ
અર્થાંતાર્થ, શકે હૈ. જ્વાં કુમારના અનુભાવમાં નાગરદેશને
ઓકઠીક વફાતા મળે છે, તેમાં જોખ અનુભાવી જાણે તુલનાં કરતાં
લાગે છે.

સાલોક ३२

પાણીથી નેતૃ ઉપદેશ ચન્દ,
રાવકરેથો ઉધેદેશ પદમ,
ધીંદોદી લેનું જ શરીર ગેતુ
સુદ્ય કર અંદે નવદી વનેથી.

ઉદ્દીપિત - માટે રેણુંકલ સુધો જ્વાં નાનું નથી. ચન્દ

ઉપસ્તી આવે છે. તેમ કષેત્ર અનુભાવની જીવન એંડમાં

અનુરાધીય નો અર્થ "અનુભોજ" આવે છે. નહીં

વાંદે અને નહીં જોઈ, કેવો અર્થ માં લ્વનાથ સુધેવે હૈ.

સાલોક ३३-અમંત્ર રહથાં ન વિનું ઉપમાન ચોણય

માં નાના; અનુર્ધુપમાનબાદ્યાઃ નો અર્થ અનુભોજ ઉત્તયો
છે.

સાલોક ३४

તાં જ પર્વીપર કુદ ઘેણે,
વા મોતો ઘેણે રહુટ વિહુણે ને,
નો કાલ જોજે તુંલ કેરનારા,
ગર્ભાં રહેણે સે જન્મત સુશ્રેરી.

સાલોક ३५

તેના પ.ઠી લોતદી બાદવાળી,
તાનાનાને જરતા જ્વાંદીશી,
ગમે ન શાખી પણ કોણિતાના,
વાગાદલાં અશુર લેમ વીં.

खोड ४६

वायुः वषे जल अरोग्य केवल ।
शुद्धिनेत्रो तां श्रीति हृष्ट ॥
लेण्डु श्रीपैदां मृगंगनाथी,
के लेनी पारैथी मृगंगनाथी.

अनुवाद देक्खरे कामी ने, ऐसेहेतु "वर्तमी" माटे हैं,
लेनी अर्थात् अराधर नहीं भजवेहु । अथवा अर्थात् अराधर
हुँ तना श्वोकोवो समरकोटी अनुवाद मूलानुसारा है.

खोड ५०

अराधर वर्षेतार्थ, गमे लेना उके रमे,
मुष्टिर वर्तकासुक भृत्याना तट सेदता।
ऐसेहेतु माटे मृगमर्त "तटता आधीलनो अथवा करे है"

है अर्थ है,

खोड ५५

लक्ष्य ते अद्वैती परम्यो त्वयी व इति नाथे,
वैष्णवो उमीरीने, अपै उपर्यु यो अथन।

खोड शुभ नोउयो है, श्रीकृष्ण तु त्वयी कर्तु
है.

खोड इहु भाष्टिर शुद्धर है.

अर्थ - ३ खोड १

तदु शुद्धिष्ठ परश्च केदां,
साधे उकरी नथनो पठे हैं,
अर्दे अलो अराधर उर्यनाथी,
वायु तां अराधर आदितोगम ॥

ऐसेहेतु पदो, मृगमर्त, प्रयोगनपेत्तिरा, गौव
अर्थो अराधर अराधर कर्तु नहीं.

१८

खंड १०

तब प्रभु वे शर्कुल लेये,
वर्षतने तेवल नहाय राखी,
पिन १५४। का उर्दुःख धर्थ,
ताजुँ तो अन्य धनुर्धरो हु? *स्मृति*

रेखा १५५ अनुवादम् "मुकुराहुतो दि, भैरुरुद्धु, दुर्द्विः -
नि अर्थ शास्त्रोज उत्तरे नै. अशुद्धमे बहाये "थर" हु ए
वापरतो पुढ़यो नै. धर्थ अलाववाने बहाये तन्त्रवानो वात नै.

खंड १५६

कुण्डन रक्षा १६३। २५५ अन्य,
मातृ जन। काल निज लक्षणे
तर्जु १६३। ८६३ अधवाइ
मुग्धी निः रवाच हु उद्दवातो.

कुण्डन, अलीरि न। अर्थ अवैज उत्तरे नै. पर्यायो
मुग्धी, द्वाचन अने अर्द्धच ध्रुव उत्ता नर्थो. लेल्लो अर्थ तो
मुग्धानुवार्ता ये न अकुक्षु असैय.

खंड १५७

मुष्पो तर्जु ओक ज गाल लूग,
पूर्णे प्रथा पार्वत भूने,
स्पृहे मीथी नेत्र उभा भूने,
थृगे करे अमृज हृष्ण लार -

भूतम् छुवर्तिस्तमः अने अर्द्धचक्र छ. लेनो अर्थ
अर्द्धच अवतो नर्थ. "करे अमृज" अमृजग वाते नै.

खंड १५८

हे उत्तर्जु पहुङ रक्षे शुर्यधा,
प्रेमे करीने जाको गलाने,

अर्थे शुभेता (वचनी) प्रयत्ने

बतावतो अस्त्र युद्ध। ५.

सहाय, गङ्गाल, इष्टुण न। अर्थे पुरा उत्तरा।

नथी, श्वोऽपि ४१-४५। "या इष्टुण भाटे" "निर्जो"

अने श्वोऽपि ४२मा विश्वासिता भर आरंभने "हृश"

उथी ऐवज ले।

श्वोऽपि ४४ "तैमोत भाषे अमता भनो ऐ" भर

ज्ञाने भाषे भोल भये ते ते अथ अहवाठ नथ ले। भनो अ भोलने

भाषे अमता एक जैवो याच ले। "ज्ञान अ अद्युक्ता"

जेनो हैरु थोडां वधतामा पुढ़वाने ? "न अद्ये अथो नथ लागे ते,

श्वोऽपि ६०

तने करी बहन नीदी शोला,

"ऐवार्थ आव्या (ग २२४ पुरी)"

शुक्खप्राणे प्रशुक्खप्राणे ते।

कृतावयो पार्वतीने प्रक्षेप" अने

श्वोऽपि ७२

वर्तीन्द्रारो, प्रशु फोट जैवी,

न्यावाणी हेवोनी नसे उठे ले,

त्वा॑ शंख नेत्रे प्रवर्टेत नान् न,

कृपने आणी करे ले अन्नम्।

भर "शंख शंखर" नो शिरः इरण्डिक्षुनेष्व जन्मा, गाधापद्मेष्व चण्डार

न। अर्थे वर्तायर प्रशुटाना नथ। भुंकु शंखरो नही -

लालत्य आवर्तु नथी, अति रक्षोऽनीन। अर्थे (६७५) लागे ते,

करी ४ श्वोऽपि ११

रजन तिभरे नवशला।

पुरमार्गे धन नाजतां नदीनी

प्रमहा (पशुधर वे जवा)

हु बना यमर्ज कोइरे भवा,
रेखांकित "ठक"मे माटे हे. मुख्तु औ. -व्य बाहुं व उतरे
ले. ऐसु ज श्वोऽ २२५८, श्वोऽ २४५८ दुष्कृतिः नो
"भनमालनतो" अनुवाद ५: श्वोऽ ज. श्वोऽ २५ "महुआ
व्युऽ १५३ दृष्टि वो" सुहराज्ञानार्थित्वुर "

माटे गात्मने। अनुवाद "१५५" दृष्टि वा त्वयावैत,

श्वोऽ ३३नी अनुवाद ५६ वाहो दोवां तो मुख्तु
बाहुल्य बाहुं नव्य. जर्य ५ श्वोऽ ६

अनं व्यनीये ५८. व्युऽ रूप्यामुष्ये,

अनोऽव्योन। उम्भुप्रता क्षेत्र,

व्य-१५८न। (उद्दीप्ता क्षेत्र चुप्तः वने),

त पर्यं भासी वग्वा लांडन.

पुणेती पं श्वमं व्यात्मका" लोक्यो ते. रेखांकित "प्रोत्येक्षा"
माटे योऽय अनुवाद नवी. नेत्रीते "प्रत्येक्षानामाय"
कुं ५९.

श्वोऽ १९, ३-४

व्युऽवा ११. श्वये वाया।

प्रत्येक्षाप्रत्येति व ते व्युऽ

मुख्यमं "५८" के प्रलभ्यते ना न व्याप्ता ओर व्याप्त इत्येवाथुं
ते भवुरयुक्तम्। अनुवाद (३. अथ ते).

श्वोऽ १५५ ("५८-१५९ व१५९ व१५९" "अर्पीतनी")
माटे ते.

श्वोऽ ११-१५५ "प्रत्येक्षाप्रत्येति" माटे "५१५"

अनुवाद क्षेत्रे. मुख्याद्य वधारे व्युऽवा ते. श्वोऽ १५५

"उत्पातामृती" कुं "अर्पीतनी", श्वोऽ १५५ "प्रत्येक्षाप्रत्येति"

ना उपरो अने अद्यप्रत्येक्षाप्रत्येति; माटे "व१५९ ते",

श्वोऽ १५९ उपरो अर्पीतो १५१२८ प्रथमपूँज्य, श्वोऽ १५१४ मा

जिससूलकरा जिसनामभाषण
तु "हवे वहे मैंडि निम।
उसतक्करे" तथा। जागीरी लीपित विन्दुबर्धिक
ने माटे "मे वर्षत शो (जुल अर्थ हवत नु" ऐवाज अनुवाद
हे. किन्तु शब्द होडते अर्थ अहवाय हे.
ख्रोड ४५

तेवेने जर्वे लेहथी गाव्राणे
रोले उथो पगजवा अर्थे लिपाउथो
मार्जे न त्यारी अरिआडी सन्तुष्टेवी
शब्दा (धराज तनया) एक निर्भी,
ऐक्करे सारो अनुवाद हे. ख्रोड ४६ इसे नस्ताम् विधी
ने माटे "प्रकुलताडे" ते शो जगो जल अर्थ हे. मालवनाथ
"अक्कलपता" अर्थ नापे हे.

लहु अर्थां अनुवाद शोटेपाले मुलानुकारा हे.
आपा लेहे भूमन् चातुना तो आहो ज उत्तरे हे, पर अर्थ
ठाकु उत्तरे हे. अर्थे उ ख्रोड १

पारी वाटे अनुद्धा लग्न
वाळी शुद मर्ण तिथि अवा ल्लाडे
साधी वापे गोरेण शुलाने
विवाडवीक्कार विधिवी दीधो.

"पारी चंदनः पूर्वदः वा। पृथमः तथा लम्ब शुगवाणी
त अमा शगांगो चाधे डेमावचे पुर्वाना विवाडनी हीडानी
विधि क्यो" ऐवो भूम अर्थ आडेंडी जूते हे. — अन्यत रहे हे:
ख्रोड ४८ अमा अर्नांडुँः तु "डीराचल मालवीक्कार,
तु "प्रभार्या" कर्तु हे. ने अर्थु ज हे. नम वधारापु हे."

ख्रोड २६

इवरेकवातु लज्जे ज दोज
ज अधरेण। चाहर्यङ्ग लिथ

ओपेल डेसे मुझकेरों का (न),

इसी (हमे) से विभाषित होगा.

२५८ (५) यह भवित्व से गति नहीं है, अजब इन
शुक्ररोप वेषाचारों पर विजय को हासिल होता है।

विशेष परम थी

१: अवां तरै भावि लवराणि लल्लि, (८)
दुटी जलो वेरी हुलीनि याला,

३: न अधिकानि ग्रहकारि याहे,
चाडों रहों डेश कामाप कोह, - ५०

४: धरेव हावी ५० पाँच अवरि,

बीताज रंगे जलो गोऽग्नुधो,

६: धारभी अज्ञने तरा पाँडनि कोह,
अनुक्त रंगी परानि कार, - ५१

८: एक अज्ञनेधो ज्यहु ज अज्ञनि, :१:

न इतु रामे अग्नाट्यानु नेव, :२:

अवां रामे आदी अभाप अलो,

१०: कुरे धरेम अली अज्ञवानि, - ५२
मर्दी आदा लानि भावि हुल्ल,

११: अंगो विनानि विद्युत रामो,

नाभो जलो दृष्टि कर्मनाला,

१२: क्षेत्री आदी चारायो जिमारि, - ५३
लवराणी की उठती हुल्लरीनि,

वेराय कंथी अरक्षा परोवी,

१३: प्रत्येक पाहे असरात मुख्ये,
क्षेत्र "अंगुकाने चुप्पुचुप्पमात्रा, - ५४

चुको मला तो अ (गर्व चुलाये,

- १३: अ। अर्थ ने वृंदा लम थो जम ले ले,
जे नैर जान थती होयो लेये,
१४: हुताहे ली गंड शुके हु मेतु ? ६५
१५: श। ने क्षिति थो ज्ञ वृषभवानी,
पः अपरे यो जल्लि के न लेड,
अ। येउनाँ रूपतो सर्वज्ञानी,
वृषभवानी थलज व्यर्थता,
अ। अले ने अशुः हुमुद भूमान,
धर्म भनोवारि प्राप्ति केहु
१६: मुण्डहु लेले अकलि उमाना,
गंडगंड : नौकरु लेय शहे . ७४

१७। इसाँटकत पहो अनुकूले अ। नो ८ माझे
चक्रगत, गंडवान, प्रसादिता, रागमेल,
लालगत्तवः, गंडवान, लहर्वाचक, लहर्वाच,
थवाच, प्रसादिता ज्ञानी न विद्या न विद्युत,
वाचः नाटे हे, वृषभवानी ने वृषभवानी भूमार्द जुड़ी जुड़ी
वृषभवानी हे. ले शारी विशेषज्ञ लक्षण अनाधि हे हे.
'हुनेमते' ने अर्थ अपराह्नपर्स आवलो नथ. लेनो एवं "गंडुम
पूर्वक" थाय, लेनो नितावल ने लक्षण अवलम्बन कीय हे.
१८। इसाँटकत जाऊन, अग्र हुदाहरि उपः जालारु नाटे हे.
दारकार क्षेत्र, ग्निकर्णिष्ठाम् ८१८ ऐक्य १५८
हे. लेने जुदां जुदां करवां पड़वां हे. वराहरेप्राप्तादीय दीप्ति
माटे' शोने' कर्तु हे, ले शबो वय हे. अकली शब्द पा शेवोऽ.
अनुवादकने डेवी डेवी भूमिकांचोनी नामनो इवो पुरुषो हे
लेनो अ। तुवनाही अथाव आवे हे. अ। अनुवाद हुमारवा
अनुवादीय शीर्थी वसु नोंधपात्र अने वारी कीवारावां अ।
क्षमात थाय हे. लेतुं कारव ऐडि अवायोनी शर्वाकडनक्षमतानी
वकावत हे. अनुवादक भूमध्ये अ। गयेज हुर वय हे. १९।
भाषान. प्रकृत्ये कारवे आम अने हे. यो व्यक्तिहठनी परंहगीनीय

પ્રશ્ન તો ખરો જ. એટલે મૂળનાં લાલિત્ય અને અર્થસૌ છઠવ
પુરાં ઉત્તરતાં નથી તેટલે અણે તે અર્થતો ષષ્ઠકારક લાગે છે.

શ્રી ८०० બીજી કંથાદિયા।

: હસ્તપ્રાપ્ત: - ૧૯૪૨

અનુવાદકે વર્ણતાલક્ષણ હેઠળું કુમાર અસવનો સર્ગ
૧, ૩, ૫નો અનુવાદ કર્યો છે. તેમને વર્ણતાલક્ષણ હેઠળ વર્ણાર્થ કર્વે
છે. સર્ગ ૪નો અનુવાદ અભિજ્ઞાન કર્યો છે. મૂળમાં આ સર્ગ-૧
ઉપાદિત ઉપૈ-દ્વારા, દીક્ષવિજ્ઞાન, વ્રીને ઉપાદિતમાં અને પાંચમો
વંશર્થમાં કર્યો છે. તેમ ના કરતાં લાંબો હેઠળ પર્યાય કરવાને કારણે
સ્થળે સ્થળે પ્રાણાર થયો છે. ઊક નાં ઉમેઝ્ઝું પડ્યું છે. હેઠળ
ઉપરનો કાલ્યુ સારો છે. સર્ગ-૧ શલોક-૧ હે-ષષ્ઠક-દિશા-દિશા-
સમ-હેઠલા-સમ-

છે એક ઉત્તર દેશે સમ દેવતાત્મા,
નામે હેમાલય મહાન નગાધ/૨૧૪,
પર્યાયમ પૂર્વ રતનાગરમાં પ્રવેશી,
અને ઉસો પૂર્ણાથી ઉપર માનહેડ
દેખાંકિત પણો અશુદ્ધ છે. રતનાગર સારો શાખાનથી લાગતો.

શલોક - ૩

સૌદર્યધીતક બને નવ હેમ આનુ,
રાન્ધો અર્નત તાંતુ રથાન ગાંધાં છે તે,,
હેઠું કલીક કિરાં થકી ના જાણાંય,
નુદીય એક અલગું ગુણે અનેક.
દેખાંકિત સૌયાગ્યવિલીય જાતધૂ ના અર્થનો આદ્ધો પડધો
પડે છે. સૌખાંયને વદ્ધાને સૌનદર્ય કરવાથી અર્થપણ કંઈક વદ્ધાન
છે. પં. ૨-૩-૪નો અનુવાદ શાખાથી દેખાંકિત ૨ વધારાનું છે.

સ્વરોક પથી

ન્યે માચ લાગ પર વાડાળીઓ અજૂમે,
તેની નીચે શુણ લઈ ઉપભોગ દેઠ ,
કોટોળે આ લંઘુષી થકી અદ્ધુ કો કો,
વિશીબન્ત સે જરૂ પ્રકાશન ઉચ્ચા શ્રેષ્ઠે .

નાયિકાની મિરસારી જ્ઞાનારી નો અનુબંધ જન્ય મધુર રિધિન
અને અર્થ અર્થાં આખતો નથી. પરંતુ તેની અનુબંધ શરીધર હે.
રિધિનીકિત ૩, "વધી/માટે અર્થું જ હે. પ્રકાશનમાં ગાલઘણના
માં વરસાદથી ઉદ્વેગ પાયેલાને લાપને કારણે એ શુભાદ
અનુભવ થાય તેનો રાખો ગંભીરતો નથો.

સ્વરોક ભ

ઉચ્ચતની પીઠપર રહેત ચક્કામ જેવાં
અંહુરથી લાખિન આસર ખોજ પડો
વિવાધરી સુવર્તિનો ઉપભોગમાં સે
દે પ્રેમ પદ્મ લખબાં નિઃ એવિને ત્યાં .

રિધિનીકિત ૧ કુંજરાળનું શોઠાં: નો રોશાધર પ્રચારને અનુબંધ
લે. રિધિનીકિત ૨. અનાંતું હે. ૩. દાનુરણી માટે
અંહુર કરું પડ્યું હે. ૪. વધારાંતું હે.
સ્વરોક મેં હૃદ્યાસધારાધિનાની હું "ઉચ્ચાદ્વરોથી"
(કલનર ગાંગ નેમાં, શુરમુરાદેવલને) કર્ણુંલોયે નથું હે.

સ્વરોક ઢ

ઉચ્ચતક્ષોષતણી ઝુંટ (નવારવાને),
ગેડ અથાં રથાના કરના હુસ્ટેશુ,
લ્યાંથી એ રથ ગુંગાન્ધત રથેતલેણી,
અંહુરી રહેયી (શાસર હે) ગાંનાં શુલાણે .

रेखांकन १ अनुभव हे. २. रगडला प्रयोग ऐवोज ३. माटे
कुवांसत अने ४. माटे कुम्हे वा ५ वो यो इता. मुळभाँ
कळूँ विष्विताचामू भाटे हे ने अर्थ कुभग रीते उत्तरतो
नथी. शब्दोऽपि १८-४

"कुल्लु^(६) अर्थ विध शुं किञ्चमेतुभ्रें"

ने वद्ये "कुल्लु^(७) किञ्चमेतुभ्रें विध शुं भ्रें"

कुँ ओत तो कुव नकर्तु पडत. कुम याटे अ प्रयोग "अ"
("नवांतुस हे." शब्दोऽपि २८, २ गरायकी ज्यम ने वद्ये
गरायकी ज्यम, ३०-४ नवनमे वहसे नवीन ३२-३ अविं-६
गृथ (कृते ज्यम ओवा शीले, ने जद्ये "कोपक शुचे : कृते
ज्यम ओवा शीले," ३३-४ "ओभा अस्मधर अना हवय
पार्वतीना" अ "ओभाक्षेक भरणहवय पार्वतीना" थर शकत.
३८नी तकरीं कृती नथी. : ने अनुवाद हे लेथी शारे. अने कै.
शब्दोऽपि ३५

ना हांध गो^(८) सम मापनः शंग शै,
अवै^(९) वलशा रथाङ्गतो पार्वतीनी,
ते अन्यर्ग रथता विधने प्रयत्ने,
सावन्य मेत्राल्लु इति कृष्ण वाणे.

अनुमेषे ऐह "ज्या॑", "पार्वती॑", "विधने प्रयत्ने॑", "सावन्य
वाणुङ्ग इति॑". वधारे शारे अनी शकत.

शब्दोऽपि ३६

अ अनीं शुक ततु कुक्कु अर्थ शु॒०४,
ने कैग वर्तमतु^(१०) वलशा रथाङ्ग,
ने कै वलशा॒०३५ ली॑ कुक्य॑ ज्यति॑,
उपमान ओवय नक्षु॑ पार्वतीना॑ उद्दिने॑.

ओहमे वद्ये "लेथी॑" आये. शीलगता पा नहमे अनु३५ हे.
रेखांकनम॑ उपमान॑ कृतु पडे हे. नेमे वद्ये "ना पार्वती॑
वृत्तवा॑ उपमान ओवा॑" वधारे शारु थर शकत.

સ્વરોક ૫૪

હોથેલ (શકુર ગંગથી ડેવદાટુ
ને મૈંક કાળું રની, કિનર ગાય હે જીં,
હેમાધ્રે નયત (ચદ્રથી શૃંગ જેવે,
ર વા હતા પણપણ, મુગથ્રે ઘાડી

સૈયાંદેલ પદમ નાયાં હે. પુ. ઉમા પણ સુભગત નથી. બાકી
નીક છે. શલોક પદમાં રઘુલાલી નો અથી મુજાદ સ્પર્શવાળી
છે. તેને યાટે મૂછ કદું હે. તો એવાં હિન્દ માટે ગે.

સ્વરોક ૫૬માં નાનાં પ્રિયાથી આતો રિમના જારોને,
કે— કે ધૂં ગુજનકરે, અભિમાન શુદ્ધ
લેતાં મુગો સીરતથી, (સિંહાં ૨૧૩ નેણે,
લેણે અયાય કરતો શુદ્ધ ગજનાંઓ)

સૈયાંદેલ અનુકૂળે, લેઠાં ખરાણ હે, નાનાં ગુજન ન કરી શકે,
મુજામાં મૂછદ હે. ગેવથ્રેમાટે અગ્રાયદ નથ. કેલ્લાં પ્રયોગ
અસુખગ હે. (સિંહ ગજના કરે હે પા. ૨૧૩ પાંચાં નથી).

સ્વરોક ૬૦

કુશુમ પુજન અથે, વેદાંથે વિષણુ વાળી,
જા નયમ વિદ્યાની, કુશને હર્ષલાલી,
પાદ્યામ (શવ કેરા, થંડ કસ્તી નિવારી),
કરતો જા સુકેશી, સુશુધા તેમની ત્યાં
અનુકૂળ રોયાંદેલ હે. મુન્નું જત હે. ૨. પરિષેદની અનુવાદ હે.
૩. અં વિમાર વાં અતની ચારવારનો એ રંગની આવે હે.

સ્વરોક ૬ (અંગી ૩)

બણુ અલુચ્છ થક. ચાલાં હું જે ઝકી,
ઝન્ડે અનોજ પર કેવજા ડેવ પેકી,
શવ માંની આદરનાંની દિન આદિતોષું,
દીલે ધૂં કરી પ્રયોજન પુરસી જ.

१५८८८ ईश्वरकुमार अने गीरका॒ ८१२ श्री बहू॑
छोड़य॑ के, शुभ कागे॑ के।

१५८९ ३

सुना॑ तमे॑ लोकतां गति॑,
जे॑ कार्य॑ छोय॑ मन॑ जल्वर॑ ते॑ जवा॑,
कथो॑ अनुग्रह॑ तमे॑ करा॑ अर्थ॑ मार्दु॑
आइवृद्धुकरी॑ करा॑ वह॑ वृद्धि॑ तेमा॑।

१५९०१ ईश्वरकुमार शास्त्रिय॑ शुभा॑ ब्रह्मा॑ नो॑ दिनि॑ आगी॑
ज उत्तरे॑ के, सेव्य॑ वृद्धि॑ ऐ॑ वर्णत वा॑ परे॑ के, शुभुक्ति॑ पा॑
के, १५८९ १२ दद्य॑ अनुग्रहो॑ देहन्वी॑ नै॑ या॑ तो॑ अन्य॑
पामर॑ अनुद्दिर॑ को॑ मात्र॑" आ॑ इश्वर॑ के।

१५९०२ १७

आज्ञा॑ प्रतान॑ लहै॑ नगर॑ उत्तर॑ कृता॑,
शृंगे॑ रहे॑ शब॑ तपश्चय॑ करे॑ ज्ञा॑,
आवा॑ उक्ती॑ करे॑ मने॑ उक्ता॑ अभ्यर॑
कुपा॑ अनुग्रहनी॑ दोगका॑ ऐकी॑ के॑।

१५९०३ "अधित्यकृत॑" थाटे॑ करे॑ है॑ ते॑ वरदावर॑ नथी॑, प. ३-४
शुभ॑ के, रहम॑ उद्द अटके॑ के, ऐम॑ अभ्यर॑ ने॑ शुण॑ अंधकार॑
है॑, ऐ॑ वर्ण॑ भारी॑ गृह॑ अवर्दग्नि॑ है॑," ते॑ थाटे॑ करे॑ के, १५९०४
रपमन्त्रज्ञने॑ थाटे॑ "अमय॑" करे॑ के, पौँछत ३-४ इश्वर॑ के।

कुडाय॑ शुभ॑ मत्वा॑ निव॑ दाशी॑ शी॑,
नै॑ शब॑ दोय॑ ज्ञामको॑ दुःखी॑ श्रृंगहाना॑,
मुरम॑ है॑, "होकार॑ होकार॑ मुआर॑ वंचना॑ अन्य॑ नश्वासनी॑ पैठे॑
वाचुने॑ वहाववा॑ वाची॑," १५९०५ रहम॑ "मन्दिरालग्नुति॑"
छोड़य॑ के।

१५९०६ २८

वर्षार्द्धे करेता वहु पुण्यग्रामे छ ,
 ज्ञानी करे चित् गुणन्ति विजीन छोठ,
 शक्ति गुण सधारा करता विजाता,
 राणे उंठन कह दुर्दि धर्दि करीने .

उत्तमर्द्धे उत्तेवाताता, कार्यकारी, निर्गन्ता, माटे ले. परंपरा
 3-4 "धर्दु कराने सामर्थ्याना गुण शर्जनयां विधातानी
 प्रदूर्दत् पराइ मुझ लिये ले." माटे लेम करे ले.
 श्लोक ३१थी वर्णतप्राकुभिवहु निःपत्ति :

ज्यें पान शुष्क ग्रन्ति अर्थरथवा जे,
 सन्मुखवायु वहतो वनस्पति,
 प्रयत्नमेजरी रक्षे अपवाह छ. ७४
 तोये मृगो अनी महोन्मल ढोलताता.

रथांडत १. काँडु ले. २. प्रत्याग्निकू माटे ले. ३. उपेरो
 ले. आपांडुरे नावनना रथवाह लेत
 कोकोल ज्यें भद्रुर कठथी झुगतो १३,
 अब एसे भनास्वनी बड़ीनो १४ योडवाने, ५।

देवो न होय अयम् मन्मथ उरी आग.

रथांडत १-२ विधाताना. छेद्वी परंपत्तो नारज ले. मुजमार्तु
 शवहवर्तु शीर्हर्वावर्तु नथ. परंपरा 3-4नो अर्थ छुटे छापे
 करो ले.

श्लोक ३३

थाता वनाश कुम छोठ अन्यं विशुद्ध
 कर्त्तव्य शुश्रेष्ठना कुननी बड़ीओनी,
 अद्रेष्व अंगमर पत्रनी आकृतिम्,
 उत्पत्ति रेतनी शो गह हीचति ती.

रेखांकित चित्राभासाशब्द, पाठ्यदीया, प्रशिक्षितोत्तमोन्म
भृते हैं, ते शुभं ज हैं।

खलोक ३४-४५ म् भारे प्रथल उरी व्यय साधतात्मा।

मुजम् एवं चिदीराः कार्त्ति शृङ्गः भृते हैं ते परा निर्विघ
छ।

खलोक ३५

न्य॑ ऋषेष्व थठ स॒ज्ञा पुण्य च॒पे,
स॒धे २ त ल॑ गयो (शब्दाश्रमे त्वा),
ल॑ अनी प॒म प्र॒तिष्ठी प्राणीमात्रे,
त्व॑ व॒द्वा॒ व॒द्वा॒ व॒द्वा॒ स॒द्य न॒दृरी त्वा॑।

मुज हे पुण्यादावर्तु धनुष यडावेलो यहन रत्नसाधे ते
व्यवहानम् वाऽव्यो त्वा॑ रे ४६४ (जे पडोयेलो अनेहनो अव
दृद्धवोक्ते त्वाथ व्यक्त करवा मांडयो)। मुज स॒धे व॒रमावना॑
अनुवादनी॑ शृणुता॑ प्रगट थावे हैं।

खलोक ३६

पौत्रोऽती भृत्य छुक्य पात्रमाने,
प्रयातुशार भृत्य अन् रहुयो ते
अप्त्यै भृत्य नयनो शृंगो नैवीयो ने,
शृंगो धर्ता॑ धर्ती शृंगो शृण्वत्यते॑ ता॑।

रेखांकित एंडो अर्थोऽकारु अनुवाद हैं, प. ३५० अन्यथ
अनुभग हैं।

खलोक ३७

जे पृथमैतुथी शुवा॑ अत अनु॑ प्रेमे
उत्तरनी॑ हेतु॑ अनु॑ उत्तरनी॑ नै
अता॑ अधु॑ व्ययत्वा॑ दा॑ प्रयाने,
संभान अ॑ अ॑ करतो॑ प्रययक्ष्वा॑ हैं।

रेखांकित घड़ी उमेरा ऐवा अने ५५ शुब्द हैं। २५०८ ६३-२८०
"पालवृत्त यात्रे" (नर्णा है, अनुभव पर है, २५०८ ७२

थानो प्रथमि प्रसु शान्त नवारी कीध,
जा है वालो नममि विचराय त्वां तो,
अन्न प्रदीप उर्मेवर्था जे थगो लो,
ओ अनोज वपुसे कुंध अभीष्ट,

अथोय २५०८ युग्मन। सौ-हर्षने अन्यत याहुं कर्मे रघुकरे
है, "अमरेष" मुग्मन। वधारे नलु यान, लगे ४ २५०८ ।
मुग्मन "मोहको पठोन। कुमवधुके अगुदय वेनावामा नववधयत्वा
प्रत्याहन; अने लान; कराववा विधि जगाडी" मे आ रीते
उत्तरे हैं।

करी अगृह मूर्त्तनाथकी
रति नरवेतन के पड़ी उत्ती,
विद्या खरल अनुभवे
नववेधत्य असुखवेहन।

श०६ पर्यावर्णन। श्री वित्तनि अभी आवी वित्तन करी
अनुवाहने नर्णा अनावे हैं;
२५०८ ८.

दमरयाह शु मेघलायी हु, अलतुहे जव नाम विधीती,
रज सालता अशुभमि तने, जा उत्तमती ताठतो वली,
"हुद्ये प्रिय हु वये" कुद्ये वयनी सर्व अन्त्य हु गर्तु,
हु अनगि हु अप्पाहता वलितु न प्रसन्न रायव।
परलोक प्रवाह ते क्यो, तव मार्ग वयरीश हु उवे,
विधी जग हेत्यु नक, सुभवधीन हु हेत्यादीन।

रेखांकित घड़ी ऐवांज, "आधिन (हु) पट्टि अन्वय, नर्णा है,
आ अग्ना अधार रक्षोकीन। अनुवाहनी आज (व्यति) ?

2015 33

10

જતા ચાર્ટથી/ ચંડની અહે
 વળી ચૌટેદા (મની મેધનાં લહે)
 વિચરે પાનપથ પાનખો
 કય નાવેતન બેઝ હાંગે

१९८० के अंत में, राहि "सहे" की पर्वत १-२वी पुनरुत्थान
में ३५० ग्रहियता निष्कर्षित किए गए।

ਕਰੀ ਪਸੋ, ਸ਼ਲੋਕ ੧, ਕਾਈਲ ਵਿਕੀਉਤ,
ਜੇਨਾ ਭੁਗ ਧਥਾ ਅਨੋਥ ਧਥਾ ਜੇਵਣ ਅ/ਤ ਪਾਵਟੀ,
ਜੇਵਣ ਭੁਗ ਧਲਾ ਚਮਲ ਮਰਨੇ ਪੰਜਾਇਨਾ ਮੇਵਥੀ
(ਨ-ਨਕੇ ਹੋ) ਨਜ਼ਦੀਪਨੇ ਹੁਦਥਮਾਂ ਧਿਆਕਾਰ ਆਪੀਅਤੇ,
ਤੇ ਕੌਖਾਵਾਂ ਗਲਾਵਾਂ ਨਵ ਮਾਡੀ, ਚੀਨਵੰਨੀ ਬੀ ਗਲ.

રેખાં (ક્રમ ૧ થણ લેખાં, ૨. લેડાં) અરાવ હો. ૩. વધારાનુ
હો. લંદન ૧૯૮૨ને અનુવાદ કરી થતું જાન નેણી બન્ધો હો.

১৪৩৫

भैन। या तने युमज्जवला ने,
सहज विवेद की शरण को नया अप
ब्रतनी हरका न यतायमान,
ठरावथी के रखो हुं राहे को।

કરે ના શાયદ નરમય હખીતારે મનમાર્ય ક્યાં,
કદમ્બે નેવનર્ય પણી, મોષેના બદલર્ય સુધ્યાં.

અનુવાદમાં ખૂલની પરિધિ ૧ તો શરીરની હે. પરિધિ પરિયગમાં
કિનની અવ્યવસ્થા હે. કોલ્ટી પંડેત કાર્યક્રમાભિકુર્ણ પ્રતીયમેનું
ને માટે હે. અનુવાદ આવોજ હે. શીદ કરામત કરવા જતાં

અનુવાદ બગડયો શે. શલોક હન્દે અનુવાદ ઉપાયતની।
૦ પંચતાંત્ર શે. શલોક ઉથી વર્તતત્ત્વકાળી, શલોક ૧૨, ૨૮૦
ઉપાય (કમાત - મુલ્યવાન માટે એજની ઘરાણ શે. ૧૩, ૧૫૦
ન્યાયભાઈ "અમાનત" કરે શે.

શલોક ૨૩

તાપે તપા ડલી અ ત વિવિધાને નાંશે,
અટકાશ ગાંભી સુવિના વળી ઠન્ધનોના,
મેઢે ખર્ચન્યાથી ઉપા કરી શ્રી ષય ગતે,
ને જ જીતે યદી ઉંઘ વણુ ધોષા સાંઘે.
પદ્ધતે ઘડીલર ઠરી અથડાઈ હોઠે,
ઝેઠું ૫૩ કલન વિચા પર યુરીથાતું,
ત્વાંથી પ્રવાલી પરથી શમયાન્તરે ને,
યા-હૃવૃષાતું છરી આપર નાભપહોંચે.

રેખાંકલ ૧. વાંચાતું શે. બાંધું (શ થવ શે. ૩. વિરોગ માટે
શે. એકંદરે ઊક સાંદુ, શલોક ૨૮ નવર્ણ પાનપર ને રાણા ઘરેલા,
શાસ્ત્રે, કે કો કરે તપની કે અવધ ગાંઠ શે,
નેથે ક્રીષ્ણનથી વાંલાંશે, સુપુરાણીઓંશે,
આખ્યું જ નાય મૃદુભાષણીને અપનાં.
અવાં અનેક તપ અઠારીને હમેશાં
યાંશું નમાય લન કોથુલ પદ્ધય ઝેઠું,
પાણાયડચાન્તુંષમુન તપથી સર્તના,
ને કે હતા કાઠન કે સપના સ્ફ્રાંશે."

રેખાંકલ ૨. ઝાલિના માટે ૨. (શથ્યન શે. ૩. ત્વાંયાધી
બઠાંશે. ૪. પુરાવિદ: માટે શે. ૫. પ્રિયાંકદાયુ ૬. ક્રતિ: ૭. શયશ્વરીનાર
માટે શે. અનુવાદ કિશ્કું અને વાંચાન્યાજ શે.

खोड ७५

उहैशी शान्ति कड़वुं के जब चाहुं थोके,
जो अदेहर न शंकर तरवने हुं,
ठिक करे मुठ अडात्मन केरी जेना,
ठेकु अगम्य जगत्त्व जगे गताथ-

ऐसोंकिंत प्रसारितो नहीं न देखिल
जेकहरे नपलो अनुवाद.

खोड ८५

अताँ समझ शब, किपतन्वेद्यु अत
धार्मिकी पाय उथेयो, परा पार्व अताँ,
सोऽय शंकु ल्यम पर्वतंना विरोधं,
शेलाधराज तनया न रही गहना.

खोड ८६

ठे पर्वत अहुं हुं, नाजर्था दास नारो,
लारा तपेज कृत हुं अरोहायतो हुं,
ठेतज अहुं तपनो शम अवस्थुली
शाताँ इतत शर्मित्वने लाहुं आजे

ऐसोंकिंत १. न धोक्का भाटे हे. २. वधारानु हे.
३. व्यातकर माटे हे. ४. न गठ रहो ना, वधारेचाहुं
अने मुलानुशारो हे. ५-६ जेहाजी अराय हे. ६. अनकलांगि
भाटे हे. ७. उगिवापिनि गुंगाली भा^{७१५५}
हे अने ८. भा^{८१५५} उत्तरव भाटे हे. ९. "कलश अक्षेत्र अने
हे" भाटे हे. अनुवाद शिथव हे. १०. अन्यसमाँ अनुवादयना।
प्रथोगो भाटेना केटवाँक सुन्हो मुः क्षा उमाशक्तरसाँ बेशीना।
आधार क्यों हे. जेनी नोंध आभार अने आर्नद बाधे झुक हुं
अनुवाद केटवाँक अनुच्छेद प्रथोगो के हे ते आ हे. ११

४९६-४९८.

न माटे शु धरे ठेकावे के. पर्स, सिंह, कमल, लक्ष्म, लक्ष्म
कुव, मैत्र, इडा, इरी, राजव भाटे अरब नवीन ने बदले नवीन,
उठे ने बदले छीडे. खोटा आगना प्रधोगी एहने कारवे
करवा पड़वा होय लेतुं पा नथी. अरवा प्रधोगी कठे ते
स्वाभावक है. अनुवादकनी एह उपर्युक्त फायू शारी है.
उपर्युक्त प्रधोगी जेवरै ग्राहने ने वाह करतरै ने अरणातारै वहे
है. परु लैदृष्ट आपाना। विश्वरूप महुर अने अर्थक्षम पदावलिने
बदले पर्यायो पाह करवान् काम मुकु अवधान पागी है लेतुं है.
करिवर आलहासन। काव्योदयरै तो तेम परमाणुरै
उत्तरतरै आ सधात (वशेषे नोंधपाक ले. "अनुवादकम्"
जेटको अभ्युनिवेश है लेटकी आ बाधतरै। कालङ्ग नथी
हेआती. लेथी अनुवादम् प्रम्भार, (शृंखला), उच्चत शम्भ
पद्मदग्नीनी अभाव, जेडकीनी झुकी आँड़ घटके है. मुजानरै
जीर्णयत्यव्याप्त रीन्दर्य नने शोटनीय अभाव हेआय है. लेथी
अनुवादक चंतोषकारक अनती नथी, "आभान्यज" रहे है.